आप प्रसन्न रह सकते हैं

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

प्रसन्नता कैसे प्राप्त करें? वस्तुतः इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति की यही एक प्रमुख समस्या है। प्रसन्नता-प्राप्ति के लिए यह आन्तरिक खोज है। यह उस कष्ट से बचने के लिए आन्तरिक प्रेरणा है, जो जन्म से मृत्यु तक मनुष्य की समस्त गतिविधियों के लिए उत्तरदायी है। यह प्रसन्नता के लिए खोज है, जो मनुष्य को धन, नाम, यश, शक्ति, पद तथा अन्य समस्त भौतिक सुविधाओं की ओर प्रेरित करती है। यह एक न बुझने वाली प्यास है जिसके कारण मनुष्य कारें खरीदता है, बँगले बनवाता है तथा बैंक में धन संग्रह करता है।

किन्तु, खेद का विषय है कि प्रसन्नता, जिसकी प्राप्ति के लिए वह दिन-रात प्रयत्नशील रहता है, उसे प्राप्त नहीं हो पाती। मेरे प्यारे बच्चो! इस सत्य को जानो कि प्रसन्नता धन या सम्पत्ति पर निर्भर नहीं रहती। भौतिक संसाधनों व ऐन्द्रिय विषय भोगों से सुख, शान्ति और प्रसन्नता प्राप्त नहीं हो सकती। इसके विपरीत वे तृष्णा की वृद्धि करते हैं और चित्त को अशान्त करते हैं। समस्त सांसारिक सुखों में भय, पीड़ा और चिन्ता मिश्रित होती है। मनुष्य निरन्तर उन चीजों को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है जो उसके पास नहीं हैं। प्रथम तो यह चिन्ता होती है कि वह उसे प्राप्त कर सकेगा या नहीं? जब वह उसे वास्तव में प्राप्त कर लेता है, तो वह इस बात से चिन्तित होता है कि कहीं उसे खो न दे। यदि वह उसे नहीं खोता है, तो भी कुछ समय पश्चात् उसे प्रतीत होता है कि उस वस्तु में कोई आकर्षण नहीं है। अतः वह दूसरी वस्तु के लिए प्रयास करता है। इस प्रकार यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है और बुढ़ापा आ जाता है जो उसे अनन्त कष्ट में डाल देता है। प्रसन्नता-प्राप्ति के लिए जिन ऐन्द्रिय-सुखों पर उसने विश्वास किया था, वे उसे जकड़ लेते हैं और उनके असाध्य भार के नीचे दबा मनुष्य चिल्ला उठता हैह्नह्न ''प्रसन्नता कहाँ है? मैं उसे कैसे प्राप्त करूँगा?''

हे मूर्ख मानव! भ्रमित मत हो। तुम उस विशुद्ध आनन्द, अनन्त शान्ति व प्रसन्नता का अनुभव कर सकते हो, यदि तुम अपने अन्दर सुचिन्तन, सुअनुभव, सुविचार, सुकार्य, मुक्त वाणी, मुक्त विश्वास तथा मुक्त आचरण का विकास करो।

अपने जीवन के वर्तमान तरीके को बदल दो। उसे दिव्य बनाओ। जीवन को आध्यात्मिकता की ओर ले जाओ। मैं आपको वह मार्ग बतलाऊँगा जिससे आप असीम प्रसन्नता प्राप्त कर सकते हैं।

इस मार्ग पर निर्भय हो कर चलो। हे वीर! आगे और आगेह्नह्नईश्वर की ओर बढ़ो। आप अभी और इसी जन्म में अमर आनन्द के साम्राज्य में प्रवेश करो। निम्न अनुदेशों का पालन करो :

ईश्वर का स्मरण करते हुए जागो।

नींद से जैसे ही तुम उठो तो सबसे पहले उस अदृश्य, सर्वशक्तिमान ईश्वर का स्मरण करो जो आप में, मुझ में और विश्व के प्रत्येक कण में व्याप्त है।

वे व्यक्ति धन्य हैं जो अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करने

से पूर्व ईश्वर का स्मरण करने के लिए समय निकालते हैं। आप उसकी प्रार्थना अन्तरतम हृदय से करो।

यदि आप इस प्रकार प्रार्थना करेंगे, तो आपको दैनिक जीवन में संघर्ष के प्रतिरोध के लिए महान् आन्तरिक आत्मिक शक्ति प्राप्त होगी। प्रार्थना का आत्मा के लिए वही महत्त्व है जो शरीर के लिए भोजन का।

शैया से उठने से पूर्व यह दृढ़ निश्चय कीजिए कि दिन-भर में कुछ अच्छाइयों का आप पालन करेंगे और फिर उनका दृढ़ निश्चय से पालन कीजिए।

कुछ अधिक स्नेह, कुछ अधिक समझ, कुछ अधिक विचार। बस इन्हीं की आवश्यकता है जिनसे घर और संसार स्वर्ग बन सकता है। परिवार में विवाद और विविधता जो नाड़ियों और मस्तिष्क में गतिरोध उत्पन्न करते हैं, इन्हीं की कमी के कारण होता है। आत्म-बलिदान की भावना का विकास करो। प्रेममय और विचारमय बनो। परन्तु अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहो।

जब तक कोई दिव्य जीवन जीना नहीं सीखता, उसे मोटर-कार और नौकरों तथा बैंक में जमा धन के साथ बँगलों का कृत्रिम जीवन प्रसन्नता नहीं दे सकता।

पति और पत्नी को परस्पर आत्म-विकास की प्रगति हेतु एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए। घर के नौकरों को भी इसमें सम्मिलित करना चाहिए। इससे मन में पवित्रता और दिव्य विचार भरेंगे।

अपने नौकरों से प्रेम तथा विवेकपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। अपशब्दों का प्रयोग कभी मत करो।

वस्त्रों और विलासिता के मामले में धनवानों की नकल करने की चेष्टा कभी मत करो। आय-व्यय (बजट) को सन्तुलित रखो। फैशन करना छोड़ दो। वेश-भूषा में सादगी बरतो।

अपनी आय का दश प्रतिशत दान करो। भूखे को भोजन देने से इनकार मत करो। जितना कुछ हो सके, दूसरों के साथ बाँट लो।

अपनी पत्नी को मात्र विषय-भोग का साधन मत मानो। उसके साथ आदर और प्रेम का व्यवहार करो। अपने पति को परमेश्वर मानो, उसका आदर करो, उससे प्रेम करो।

बच्चे भविष्य के निर्माता हैं। वे राष्ट्र की सम्पत्ति हैं। उन्हें प्रशिक्षण दो। उन्हें अनुशासित करो। प्रेम-मिश्रित एवं विवेक-युक्त दृढ़ता से शान्त करो। बच्चों को न तो डाँटो, न पीटो और न ही उन्हें डराओ। उनके साथ सज्जनता का व्यवहार करो।

निर्धन को सुखी बनाने, निर्बल की रक्षा करने, आपदा-ग्रस्त को शरण देने और रोगी की सेवा करने के लिए अधिक-से-अधिक प्रयास करो।

अपने माता-पिता की सेवा करो। माता-पिता की सेवा से हृदय पवित्र होता है और प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

सिनेमा मत देखो। यदि यह सम्भव न हो, तो केवल धार्मिक और शिक्षात्मक चलचित्र ही देखो और वह भी कभी-कभी।

प्रतिदिन सायंकाल के समय भ्रमण के लिए जाने का प्रयत्न करो। यह मनोरंजक भी होगा और साथ-साथ लाभप्रद भी।

क्लबों में जाना, ताश और जुआ खेलना बन्द करो। भोजन के पश्चात् रात्रि में आत्मोन्नति का साहित्य पढ़ो और प्रभु की हृदय से प्रार्थना करके शैया पर जाओ।

उसके पश्चात् दिन-भर में किये गये कार्यों का

विश्लेषण करो। की गयी भूलों को ढूँढ़ो और उन्हें आगे न करने का प्रयास करो।

अपने इष्ट-मन्त्र का मानसिक जप करो और सो जाओ।

वे सुखी हैं जो निद्रा से पूर्व प्रार्थना करते हैं और उठने पर तुरन्त प्रार्थना प्रारम्भ कर देते हैं। ऐसे व्यक्ति ईश्वर के हाथों में ऐसे सुरक्षित रहते हैं जैसे बच्चे माँ की गोद में।

आपका भविष्य आपके विचारों और कर्मों से बनता है। जैसा आप सोचते हैं, वैसा बन जाते हैं। प्रकृति का यह अमिट नियम है। इसी क्षण से अपनी विचारधारा और मानसिक स्थिति बदल दीजिए। अच्छे कार्य कीजिए। सही विचारधारा का विकास कीजिए। विशुद्ध और पवित्र इच्छाएँ रखिए। घृणा, विकृत प्रेम और वासनाओं का त्याग कीजिए। सत्य का जीवन बिताइए। दिव्य जीवन यापन कीजिए और सदा प्रसन्न रहिए।

प्रभु आपको अच्छा स्वास्थ्य, दीर्घ आयु, शान्ति, मोक्ष और आत्म-प्रकाश प्रदान करें! ॐ तत्सत्!

(अनूदित)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

अपने अन्तरिम आयाम को जानें १

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के तीन आयाम हैं। अधिकतर लोग, विशेष रूप से साधक, उनमें से दो के प्रति तत्काल जागरूक हो जाते हैं, और उन्हें समझने तथा उन पर कार्य करने का प्रयत्न करते हैं। किन्तु तीसरा जो है, उसे जानते तो सब हैं; किन्तु इसकी ओर ध्यान नहीं देते। कोई भी उसका महत्त्व पूर्णतया नहीं समझता।

प्रत्येक व्यक्ति प्रथम आयामह्लसांसारिक जीवन, बाह्य जीवन, व्यावहारिक जीवन जिसमें हमें अन्य लोगों से सम्बन्ध रखना हैह्लके प्रति जागरूक है और उसकी ओर ध्यान देता है। यह बाह्य लौकिक जगत् प्रात: निद्रा से जागते ही, सब ओर से हमारी ओर आता है। इसके प्रति हम कुछ नहीं कर सकते और यह भी हमारी आन्तरिक भावनाओं के प्रति उपेक्षापूर्ण रहता है। लोग और परिस्थितियाँ हमें कार्य करने को बाधित करती हैं, और हमें कार्य करने पड़ते हैं।

द्वितीय पक्ष हमारा आध्यात्मिक जीवन है जिसमें हम भगवान् से जुड़े हुए हैं, जहाँ हम आत्मा, अमर-अजन्मा, आत्मा हैं। इस आयाम में हम परमात्मा हैं जिसे अस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, वायु सुखा नहीं सकती; हम शाश्वत, नित्य-शुद्ध, परिपूर्ण और अविनाशी हैं।

जीवन का तृतीय आयाम, जिसे सब जानते हैं, किन्तु इस ओर ध्यान नहीं देते, वह बाह्य सांसारिक जीवन और आन्तरिक आध्यात्मिक जीवन, दोनों से ही अधिक महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि यह तीसरा पहलू ही है जो यह निश्चित करता है कि आप बाह्य जीवन में कैसे व्यवहार करेंगे और आध्यात्मिक जीवन में क्या करेंगे।

यह तृतीय आयाम है आपके विचारों, भावनाओं, दृष्टिकोणों, मनोवृत्तियों, प्रतिक्रियाओं, आपकी स्मृतियों के मानसिक जीवनह्लह्लसैकड़ों-हजारों स्मृतियों, कल्पनाओं, इच्छाओं, योजनाओं, लालसाओं और भविष्य-चिन्तन इत्यादि से पूर्ण आपका आन्तरिक जीवन। यह आपको सकारात्मक और नकारात्मक मनोवृत्तियों का, विकृतियों का, न्याय-संगत अथवा अन्याय-संगत, बुद्धिमत्तापूर्ण अथवा मूर्खतापूर्ण मनोवैज्ञानिक जीवन हैह्लह्लयह आपके चतुर्दिक् घटते रहने वाली आन्तरिक प्रति-क्रियाओं का जीवन है।

हम इस तीसरे पहलू को जानते तो हैं; किन्तु अपने बाह्य जीवन में इतने व्यस्त हैं, अपनी साधना में, अपने आध्यात्मिक जीवन मेंह्लह्लजप, ध्यान, स्वाध्याय, उपासना और भजन-कीर्तन इत्यादि में इतने संलग्न हैं कि इसकी ओर ध्यान ही नहीं देते, जब कि हमारे ज्ञान-सम्पन्न और विवेकशील पूर्वजों ने इसे अत्यधिक महत्त्व दिया है।

उन्होंने इसे इतना महत्त्व दिया कि उन्होंने यहाँ तक कहा कि यह बीच का अन्तरिम आयाम, यह

सूक्ष्म, अदृश्य किन्तु अत्यन्त ठोस रूप में अनुभव किये जा सकने वाला स्तर है जो यह निश्चित करता है कि यह जगत् आपके लिए कैसा और क्या होगा तथा आपका आन्तरिक आध्यात्मिक जीवन कैसा होगा। सब-कुछ इसी पर निर्भर करता है; क्योंकि वास्तव में दिन-भर, प्रात: से रात्रि तक, आप केवल इस आन्तरिक आयाम में, अपने जीवन के इस मनो-वैज्ञानिक (मानसिक) स्तर पर ही जीवन जीते हैं। यह स्वयं ही आपके बन्धन और मोक्ष का कारण है। केवल मन ही मनुष्य के बन्धन अथवा मोक्ष का कारण है। व्यक्ति जैसा सोचता है, वैसा ही वह होता है। आप जैसे विचार रखेंगे, वैसे ही बन जायेंगे। जैसा मनुष्य का विश्वास होता है, वैसा ही वह स्वयं होता है। इस प्रकार विभिन्न ढंगों से कहा गया है कि अन्तरिम, आन्तरिक जीवन (जो कि न तो उच्चतर आध्यात्मिक जीवन है, न ही भौतिक जगत् है) जो कि आपके जीवन का वास्तविक सारतत्त्व है, आप उसी में रहते हैं।

जब आप बाह्य व्यावहारिक जगत् से स्वयं को जोड़ते हैं, तब आप इस अन्तरिम जीवन में ही जी रहे होते हैं, स्वप्नावस्था में भी आप अपने इस अन्तरिम आयाम में होते हैं। और आध्यात्मिकता के सम्बन्ध में, साधना के सम्बन्ध में आप जो-कुछ भी जानते हैं, जो-कुछ भी समझ कर ग्रहण करने के उपरान्त अपने जीवन में लागू करते हैं, वह भी इस अन्तरिम आयाम में ही करते हैं। आपकी बुद्धि, आपकी तर्क-शक्ति और आपकी समझ-बूझ के ऊपर ही आपका उच्चतर आध्यात्मिक जीवन आधारित है।

और आपकी यह उच्चतर आध्यात्मिक प्रक्रियाएँ, जैसे जप और ध्यान इत्यादि, यदि आपके ठीक ढंग से जिये गये अन्तरिम-जीवन के द्वारा भली-भाँति समर्थित नहीं हैं, तब तो सब-कुछ व्यर्थ है। आप वर्षों तक साधना करते रहें, तो भी पूर्णतया बन्धन में ही जकड़े रहेंगे। आप एक पग भी आगे नहीं बढ़ेंगे; क्योंकि कुछ ऐसा है जो आपको नीचे ही बाँधे रखेगा, नीचे ही खींचे रखेगा।

इसलिए जब आत्मसाक्षात्कार-प्राप्त महान् सन्त-मनीषियों ने विधि-नियम प्रतिपादित किये, तो उन्होंने सबसे अधिक ध्यान आपके संकल्प-विकल्पों, आपकी वृत्तियों की ओर दिया। उन्होंने मन द्वारा धारण की जाने वाली विभिन्न अवस्थाओं का गहराई से अध्ययन किया। और उन्होंने बुद्धिमत्ता-पूर्वक, समझदारी से, सावधानी और सहज बोध से इस अन्तरिम जीवन को जीने के ढंगों और साधनों का प्रतिपादन किया। क्योंकि यही है जो कि निश्चित करता है कि आपके बाह्य जीवन का कोई भी तत्त्व, कार्य या परिस्थिति आपके स्थूल, भौतिक, सांसारिक जीवन में आपके लिए अनुकूल होगी या प्रतिकूल।

यदि किसी व्यक्ति को अवश्यम्भावी मृत्यु का सामना करना पड़े, तो वह भय से आक्रान्त हो उठता है। किन्तु यदि व्यक्ति मन में निश्चय कर लेता है, तब वह इसे चुनौती के रूप में स्वीकार कर लेता है और इस प्रकार भीतर का समस्त साहस और शौर्य, जो कि उसका आन्तरिक तत्त्व है, जाग उठता है। मार्कण्डेय ने अपने सामने खड़ी हुई मृत्यु को महाविपत्ति अथवा संकट के रूप में नहीं लिया, वह भयभीत नहीं हुआ; बल्कि उसने कहाह्न ''नहीं, मैं इसका सामना करूँगा और इस पर विजयी होऊँगा।'' सावित्री का पति मृत्यु का ग्रास बनने वाला था, उसका वैधव्य निश्चित था। सामान्यतया कोई भी स्त्री ऐसी परिस्थिति में सीना पीटने लगती, रोने-चिल्लाने लग जाती। किन्तु

सावित्री? नहीं! उसने कहाह्वह्व''मैं मृत्यु तक का विरोध करने का साहस करूँगी।'' और प्रतिक्रिया, सावित्री के आध्यात्मिक पक्ष की नहीं थी, यह तो उसका मानसिक पक्ष था, जिसने मृत्यु की चुनौती को स्वीकार करके परिस्थिति का सामना किया और विजयी हुई।

यदि आप अपने जीवन के इस अन्तरिम आयाम को ऐसे सही बोध का उपकरण बना लें कि आप प्रत्येक वस्तु का सामना सकारात्मक और क्रियात्मक ढंग से करें, पराजयपूर्ण, निराशावादी या नकारात्मक ढंग से नहीं, तो यह संकेत है कि आप क्या कुछ कर सकते हैं। जीवन की ओर आगे बढ़ें। अपने भीतर की प्रत्येक शक्ति का उपयोग करें। बाहर की समस्त वस्तु-परिस्थितियों से सकारात्मक ढंग से व्यवहार करें।

इस संसार में सब-कुछह्वह्वप्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक परिस्थिति और प्रत्येक अनुभवह्वह्वसकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष लिये हुए है। विवेकी साधक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए, सकारात्मक दृष्टि, सकारात्मक पहुँच और अवस्थिति रखते हुए, सदैव अपने अन्तरिम आयाम का उपयोग करता हैह्वह्व ''देखूँ, मैं कैसे इससे लाभ उठा सकता हूँ। जब भगवान् मेरे माता, पिता, बन्धु, सखा, सम्बन्धी सब-कुछ हैं और वह मेरा भला चाहने वाले मेरे हितैषी हैं, तो यदि उन्होंने यह परिस्थिति उत्पन्न की है तो इसके पीछे भी कोई उद्देश्य ही होगा। नहीं तो वह ऐसा क्यों करते। अत: देखूँ, इसके द्वारा मैं क्या और कैसे लाभान्वित हो सकता हूँ, इसका मैं कैसे सदुपयोग कर सकता हूँ, अथवा इसके होते हुए भी मैं कैसे आगे बढ़ता रह सकता हूँ।''

यह आन्तरिक आयाम है जो कि पूर्णतया कार्यरत रहना चाहिए, बुद्धिमत्तापूर्वक विचार करके, युक्तिपूर्वक खोज करते हुए, विवेकपूर्वक पग-पग पर निश्चय करते हुए कि इस व्यावहारिक जगत् से कैसे निपटा जाये, इसमें किस ढंग से रहा और चला जाये! यही वह अन्तरिम आयाम है जो निश्चित करता है कि आपके साथ घटने वाली प्रत्येक घटना और वस्तु-स्थिति आपके लिए कैसी सिद्ध होने वाली है। क्योंकि जब तक हम सचमुच आत्म-बोध प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक प्रत्येक व्यक्ति एक मनोवैज्ञानिक प्राणी है। इसलिए प्रबोधन-प्राप्ति, प्रकाश और मोक्ष-प्राप्ति के सम्पूर्ण प्रशिक्षण के लिए इसे एक सही उपकरण बनाने के लिए यह एक सबसे आवश्यक हिस्सा है।

अत: यह ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है कि अपने इस मनोसाम्राज्य के अन्तरिम आयाम में आप हर दिन क्या कर रहे हैं, अपने मन में कैसे विचारों को प्रवेश होते रहने दे रहे हैं, कैसे विचारों को आने से रोक रहे हैं, आप किस प्रकार व्यवहार कर रहे हैंह्वह्व''यह मेरे लिए अच्छा है, यह मेरे लिए समस्या बन सकता है। मैं अपने ही मन द्वारा अपने लिए समस्या उत्पन्न करने देना नहीं चाहता। मैं इसके द्वारा समाधान चाहता हूँ, समस्याएँ नहीं। इसलिए मैं इस ओर पूरा ध्यान दूँगा और देखूँगा कि मेरी मानसिक प्रक्रिया कैसे कार्य करती है, किस ढंग से विचारों को लेती है। मैं सावधान रहूँगा कि जो-कुछ भी मन में आता है और आ कर अभिव्यक्त होता है, वह सकारात्मक, सहायक और रचनात्मक हो, नकारात्मक, विध्वंसक और मेरे लिए भार-रूप न हो।''

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

पूर्व-अंक का शेष :

ब्रह्माण्ड का स्वामी : ईश्वर

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

'एष योनि: सर्वस्य प्रभवाप्ययौ' ब्रह्मवह सब वस्तुओं का मूल कारण है। बीज से वृक्ष की भाँति सर्व पदार्थ उसी से उत्पन्न होते हैं। वृक्ष देखने में बहुत विशाल हो सकता है, किन्तु उसकी सम्पूर्ण शक्यता उसके बीज में निहित है। बीज के प्रकार से ही वृक्ष की भावी आकृति, प्रकृति आदि पूर्वत: ही निश्चित हो जाती है। ऐसा नहीं है कि अंकुरण-काल में कुछ नयी वस्तु समक्ष आये। बीज में जो-कुछ था, केवल वही कार्य रूप में अर्थात् पौधे अथवा वृक्ष रूप में समक्ष आता है। इसी भाव से यह जगत् स्वत: निश्चित (Self-determined) है अर्थात् यह ईश्वर रूपी कारण अवस्था (Causal State) में अथवा ईश्वर के गर्भ में पूर्वत: ही पूर्णरूपेण विद्यमान है। एवंविध, कहा जा सकता है कि वैश्विक भाव में सब-कुछ सदा के लिए निश्चित है। ब्रह्माण्ड में किसी प्रकार के प्रयास से कोई भी परिवर्तन नहीं लाया जा सकता; क्योंकि समस्त प्रयास जीव की चेष्टाएँ हैं, जिसके अस्तित्व और कार्य बीज रूप ईश्वर द्वारा नियन्त्रित होते हैं जिससे यह प्रपंच उद्भूत है। सर्वज्ञता में भविष्य का ज्ञान अन्तर्निहित है और यदि भविष्य ही अनिश्चित बन रहा हो, तो सर्वज्ञता का भाव रहना भी असम्भव है। हम यह नहीं कह सकते कि व्यक्तिगत प्रयास से भविष्य परिवर्तित किया जा सकता है और तथाकथित प्रयास जो भविष्य में हम आरम्भ करना चाहते हैं, वह पहले से ही ईश्वर जानता है और भविष्य के हमारे सभी प्रयास ईश्वर की इच्छा (Will of Ishvara) से नियत होते हैं। हम जब समाज में कोई परिवर्तन लाना चाहते हैं, तो ईश्वर पहले से ही यह जानता है कि हम 'क्यों' और 'कैसे' ये परिवर्तन लाने के प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार ईश्वरीय दृष्टिकोण से यह वैश्विक संकल्प है, किन्तु जीव की चेष्टाओं के दृष्टिकोण से यह एक परिवर्तन की प्रक्रिया प्रतीत होती है जिसका भविष्य निश्चित नहीं है। इसलिए ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, सर्वज्ञ है, अन्तर्यामी है, सब वस्तुओं का कारण है और सभी जीवों की उत्पत्ति एवं लय का स्थान है।

'प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम्' ब्रह्मप्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति, स्थिति और लय का कारण ईश्वर है। उसकी सत्ता के भीतर ये सब कार्य चलते हैं। हमारी गतिविधियाँ हमें ईश्वर की सत्ता के बाहर नहीं ले जा सकतीं। सुदूर क्षितिज में लाखों मील दूर क्यों न हम निकल जायें, सितारों तक क्यों न पहुँच जायें, पुनरपि हम ईश्वर के शरीर (Body of Ishvara) में रहते हैं। इससे बाहर हम जा ही नहीं सकते। हमारे विचार, हमारा आत्मा, वैकुण्ठ की उड़ान भरे अथवा अधोलोक में उतर आये, वे ईश्वरीय ज्ञान के ईक्षण में ही रहेंगे और ईश्वर के शासन में ही होंगे। पतंग को आकाश में उड़ने की कितनी भी स्वतन्त्रता क्यों न हो, किन्तु जब तक वह डोर से बँधी है और डोर धरा पर किसी कील से बँधी है, तब तक उसकी उड़ान नियन्त्रित रहेगी। हमारी स्वतन्त्रता हमारे प्रारब्ध कर्म

के व्यापार की परिधि में सीमित है, इस सीमा से परे हम नहीं जा सकते। हमें स्वतन्त्रता है; किन्तु सीमित, पूर्ण नहीं। यह स्वतन्त्रता वही है जो एक माँ अपने शिशु को देती है। शिशु के पास स्वतन्त्रता एक सीमा तक है, उसके आगे माँ की आज्ञा नहीं है। हमारी अवधारणा शक्ति, युक्तिपूर्वक विचारणा शक्ति और ज्ञान ग्रहण करने की शक्ति के अनुरूप ही ईश्वर की ओर से हमें स्वाधीनता मिलती है; किन्तु यह सब निर्णय ईश्वर के हाथ में है, ईश्वर का नियम ही निर्णायक है और इस नियम का हम निराकरण नहीं कर सकते, हमें इस नियम का अनुवर्तन करना ही होगा। यदि हमारा अहंभाव कुछ प्रतिक्रिया करता है, जैसा कि सामान्यतया ऐसा हो जाता है अर्थात् ईश्वर के नियम का उल्लंघन करता है, तो उसकी भी प्रतिक्रिया होती है और यह प्रतिक्रिया ही कर्म का नियम है। हमें बन्धन में डालने वाला कर्म कुछ और नहीं प्रत्युत ईश्वर के नियम के निराकरण का प्रभाव है और ईश्वर की इच्छा के अनुरूप आचरण ही निष्काम कर्म है। यही है कर्मयोग! जब हम उसकी इच्छा के अनुरूप चलते हैं, उसके नियम का पालन करते हैं और फिर कर्म में प्रवृत्त होते हैं, तो हम कर्मयोग करते हैं। किन्तु जब हम ईश्वर के नियम का अतिक्रमण करते हैं और अपने अहंकार के आदेश का पालन करते हुए कर्म करते हैं, तो हम बन्धन में डालने वाला कर्म करते हैं। इसीलिए ईश्वर ही सर्वस्व है, सभी प्राणियों और पदार्थों के भीतर-बाहर वही है। ऐसी ही महिमा, शोभा और महानता उस प्रभु की, उस ईश्वर की, समस्त जड़-चेतन पदार्थ और जीव जिसके अभिन्न अंग हैं, जिसकी सुन्दर रचना हैं। ईश्वर की सत्ता में सजीव और निर्जीव का अथवा जड़ और चेतन का कोई भेद नहीं है। उसके लिए तो यह सब चेतन सत्ता है। कोई जड़त्व अथवा मृत पदार्थ (dead matter) नहीं है, क्योंकि यह तो उसी का अस्तित्व (His Being) है। वह सर्वव्यापक है, वह अन्तर्यामी है। यह ब्रह्माण्ड की कारण-अवस्था (Causal Condition) है जिसके अनुरूप जीव की प्रज्ञा अनुभव प्राप्त करती है। व्यक्ति की कारण अवस्था प्रज्ञा है, सार्वभौम कारण-अवस्था ईश्वर है। व्यक्ति की सूक्ष्म अवस्था तैजस है, समष्टि की सूक्ष्मावस्था हिरण्यगर्भ है। व्यक्ति की स्थूल अवस्था 'विश्व' है और ईश्वर की स्थूल अवस्था 'वैश्वानर' है जिसे 'विराट्' भी कहते हैं। ईश्वर वह समग्र सत्ता है जिसमें सभी वैश्विक अवस्थाएँ एकत्व को प्राप्त होती हैं। (समाप्त)

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

नव-जीवन का दिन

प्रत्येक दिन जो बीत जाता है, आपसे आपके बहुमूल्य जीवन का एक अंश छीन लेता है। अतः आज से, अभी से सतत साधना में जुट जायें। अनावश्यक पश्चात्ताप में समय नष्ट न करें। आज ही सर्वोत्तम दिन है। आज के दिन को अपने नव-जीवन का दिन बन जानें दें। पुरानी त्रुटियों को नमस्कार कर लें और उनसे विदा ले लें। नूतन आशा, नये निश्चय तथा नवीन सजगता के साथ आगे बढ़ेंह्ह्पीछे की ओर न देखें।

स्वामी शिवानन्द

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

भारत के वीर और वीरांगनाएँ ३

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

शकुन्तला

शकुन्तला मेनका और विश्वामित्र की पुत्री थीं। कण्व ऋषि उसके पालक-पिता थे। शकुन्तला ने दुष्यन्त से विवाह किया। उसने दुष्यन्त से वचन लिया कि उसका पुत्र राजगद्दी पर बैठने का अधिकारी होगा। उनके एक पुत्र जन्मा। वह भरत के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शकुन्तला अपने पुत्र को ले कर दुष्यन्त के दरबार में गयी और भरत को युवराज के रूप में स्वीकार करने को कहा। दुष्यन्त ने कहा कि 'मुझे कुछ याद नहीं है।'

तब दुष्यन्त को आकाशवाणी सुनायी दीह्न ''अपने पुत्र को आश्रय दो। शकुन्तला सत्य बोल रही है।'' आकाशवाणी सुन कर दुष्यन्त ने भरत को युवराज के रूप में स्वीकार किया। भरत एक सुप्रख्यात राजा बना। उसी के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

हे माधव ! अपने वचन पर हर मूल्य पर डटे रहो। सत्य की ही जय होती है, असत्य की नहीं।

सावित्री और सत्यवान्

सावित्री राजा अश्वपति की पुत्री थीं। वह बड़ी सुन्दर और सुशील थीं। राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान् (जो अपने राज्य से निर्वासित कर दिये गये थे) के साथ सावित्री का विवाह हुआ।

नारद ऋषि से सावित्री को मालूम हुआ कि उसके पति एक वर्ष के अन्दर मर जाने वाले हैं। कुछ दिनों के बाद उन्हें पता चला कि आज से चार दिनों बाद पति का देहान्त होने वाला है। उन्होंने अन्तिम तीन रातों तक व्रत रखा।

सत्यवान् के साथ वह भी वन में गयीं। उसके प्राण ले जाने के लिए यम आया। लेकिन सावित्री यम के साथ लड़ती रहीं और अपने पातिव्रत्य के बल पर पति को वापस ले आयीं।

हे सुशीला! सावित्री के समान पवित्र रहो।

नल और दमयन्ती

नल निषध राज्य (जिसे आजकल बरार कहते हैं) के राजा वीरसेन के पुत्र थे। वह बड़े सुन्दर और सदाचारी थे। विदर्भ के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती से उन्होंने स्वयंवर में विवाह किया।

चौपड़ के खेल में नल ने अपना राज्य और सारी सम्पत्ति गँवा दी। केवल एक वस्त्र के साथ वह राज्य छोड़ कर चल पड़े। दमयन्ती भी उनके साथ चली।

वन में नल दमयन्ती को छोड़ कर चल दिये। दमयन्ती चेदि देश के राजा के महल में ठहरी। नल अयोध्या के राजा के अस्तबल में काम करने लगे। दमयन्ती को उसके पिता घर वापस ले आये। उसका दूसरा स्वयंवर रचा गया। नल भी आये। स्वयंवर में नल और दमयन्ती फिर मिल गये। नल ने अपना राज्य जीत लिया।　　**(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)**

योग द्वारा स्वास्थ्य :

सिद्धासन

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

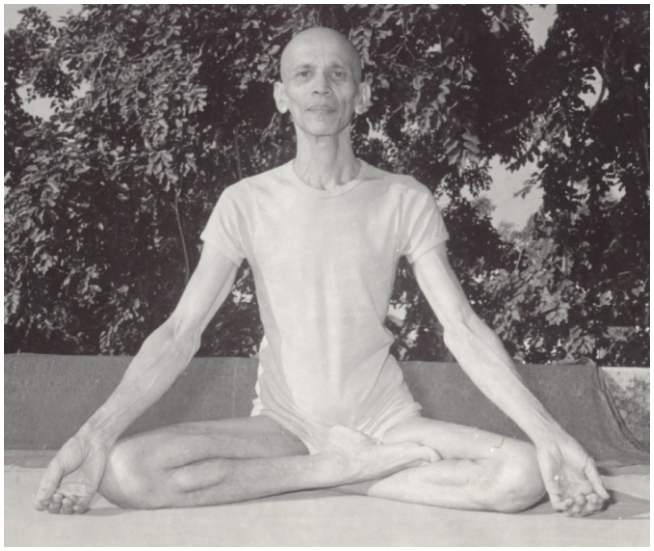

विधि

एक एड़ी को गुदा (पोषण-नाल या पाचक नलिका के अन्तस्थ मुख) पर रखें। दूसरी एड़ी को जननेन्द्रिय के मूल पर रखें। पैरों को इस प्रकार सुव्यवस्थित रखें कि दोनों गुल्फ-सन्धियाँ परस्पर स्पर्श करती रहें। हाथ पद्मासन की भाँति रखे जा सकते हैं।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

संसार

संसार वास्तविक नहीं है; क्योंकि अज्ञान-निद्रा टूटने पर संसार लुप्त हो जाता है। संसार अवास्तविक नहीं है; क्योंकि हम इसका अनुभव करते हैं।

संसार न अच्छा है, न बुरा। मन उसे अच्छा या बुरा समझता है। अच्छाई-बुराई संसार में नहीं, मन में है। मानव केवल मन का प्रतिबिम्ब ही देखता है।

ब्रह्म का परमानन्द संसार के विभिन्न रूपों में प्रकट होता है। संसार में समस्त अस्तित्व एक-सा है। ब्रह्म ही उनमें साँस लेता है। एक ही परम तत्त्व समस्त जीवों में व्याप्त है। संसार में कुछ भी एक-दूसरे से भिन्न नहीं है। सबमें उस 'परम तत्त्व' का ही दर्शन करें।

स्वामी शिवानन्द

बाल-स्तम्भ

परम सुख ३

स्वामी रामराज्यम्

बच्चो जब हमें संसार की मनचाही वस्तु या परिस्थिति मिल जाती है अथवा मनचाहे प्राणी का संयोग मिल जाता है, तब हमें सुख होता है। लेकिन इस सुख के पीछे-पीछे दु:ख किसी-न-किसी रूप में अवश्य ही आता है। दूसरी ओर, जब भक्त को भगवान् दर्शन देते हैं, उससे बातें करते हैं, उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हैं अथवा उसके साथ खेलते हैं, तब भक्तों को जो सुख मिलता है, वह है परम सुख। उस सुख की बराबरी किसी भी सुख से नहीं की जा सकती। उस सुख का किसी भी प्रकार के दु:ख से सम्बन्ध नहीं होता।

कुछ भक्त बालकों को इस परम सुख का अनुभव मिला है। तुम भी भगवान् के भक्त बन कर इस सुख का अनुभव कर सकते हो। कुछ भक्त बालकों की चर्चा करके हम तुम्हें इसी (परम) सुख की झाँकी दिखा रहे हैं।

मोहन

बच्चों की उस पाठशाला का रास्ता एक जंगल से हो कर जाता था। वैसे तो अधिकांश बच्चे पाठशाला में गुरु जी के पास ही रहते थे, लेकिन मोहन छोटा था, वह अपनी माता के बिना कैसे रहता? अत: गुरु जी ने उसे घर से आ कर पाठशाला में पढ़ने की अनुमति दे दी थी।

मोहन को रोज जंगल से हो कर आना-जाना पड़ता था। जंगल में उसे बहुत भय लगता था। एक दिन वह अपनी माता से बोलाह्वह्व''माँ, मुझे जंगल में बहुत डर लगता है, तू किसी को मेरे साथ भेज दिया कर।''

माता ने कहाह्वह्व''मैं किसको तेरे साथ भेजूँ? एक गोपाल को छोड़ कर कोई भी हमारा नहीं है।''

''यह गोपाल कौन है?'' मोहन ने पूछा।

''वह तेरा भाई है।''

''वह मुझसे छोटा है या बड़ा?''

''वह तुमसे बड़ा है।''

''वह कहाँ रहता है?''

''वह हर जगह रहता है; लेकिन सबको दिखायी नहीं पड़ता। उसे प्रेम से पुकारो, व्याकुल हो कर पुकारो, तो सामने आ जाता है।''

''मैं प्रेम से पुकारूँ, तो वह आ जायेगा?''

''हाँ, आ जायेगा।''

''वह जंगल में भी आ जायेगा? वह वहाँ आ जाये, तो कितना अच्छा हो।''

''हाँ, जंगल में भी आ जायेगा, लेकिन उसे प्रेम से पुकारना।''

''मैं उसे क्या कह कर पुकारा करूँ ?''

''तू उसे गोपाल भैया कह कर पुकारना।''

''ठीक है, मैं समझ गया।''

दूसरे दिन मोहन जंगल से हो कर पाठशाला जा रहा था। तभी उसे किसी जंगली जानवर के गरजने की आवाज सुनायी पड़ी। भय के कारण वह काँपने लगा। उसने आँखें बन्द कर लीं। वह चिल्लायाह्वह्व''गोपाल भैया, गोपाल भैया, यह न जाने किस जानवर की आवाज है? यह मुझे खा जायेगा। तुम जल्दी से आ जाओ।''

मोहन को सुनायी पड़ा, कोई कह रहा थाह्वह्व ''भैया, डर मत, मैं आ गया।''

थोड़ी देर बाद मोहन को किसी की पद-चाप सुनायी पड़ी। उसने आँखें खोल दीं। उसने देखा कि उसके सामने एक

साँवला-सलोना बालक खड़ा है। उसके एक हाथ में लकुटी (छड़ी) थी। कमर में बाँसुरी खुँसी हुई थी।

''तू गोपाल भैया है?'' मोहन ने पूछा।

''हाँ, मैं गोपाल हूँ,'' गोपाल ने कहा।

खुशी के मारे मोहन गोपाल से लिपट गया।

गोपाल ने मोहन का हाथ पकड़ा और बोलाह्न''तू बड़ा डरपोक है। अच्छा, जब भी तुझे डर लगा करे, मुझे बुला लिया कर।''

मोहन की दृष्टि बाँसुरी पर पड़ी। उसने पूछाह्न''यह क्या है?''

''यह मेरी वंशी है।''

''तुम इसे बजाते हो? बजा कर सुनाओ न?''

''नहीं, नहीं, तू पाठशाला जा। तुझे देर हो जायेगी।''

मोहन का हाथ पकड़े हुए गोपाल ने उसे जंगल पार करा दिया और वापस लौट गये।

शाम को पाठशाला से लौटते समय मोहन ने जंगल में अपने गोपाल भैया को फिर पुकारा। गोपाल भैया आ गये। उन्होंने उसे जंगल पार करा दिया।

मोहन ने कहाह्न''घर चलो। मैं वहाँ अकेला हूँ। मैं वहाँ किसके साथ खेला करूँ?''

गोपाल ने हँस कर उसे चपत लगायी और जंगल में लौट गये।

मोहन ने माँ को गोपाल के बारे में बताया।

माँ सब समझ गयी; लेकिन वह बोली कुछ नहीं।

अब तो मोहन रोज ही जंगल में अपने गोपाल भैया को पुकार लिया करता था। उसके पुकारने पर गोपाल भैया आ जाते थे और उसका हाथ पकड़ कर उसे जंगल पार करा देते थे।

एक दिन पाठशाला में गुरु जी के पिता जी का श्राद्ध था। गुरु जी ने विद्यार्थियों को घर जाने की छुट्टी दे दी और उनसे कहाह्न''अपने-अपने घरों से खाने-पीने की चीजें लाना।''

मोहन ने पूछाह्न''मैं क्या लाऊँ गुरु जी ?''

गुरु जी जानते थे कि मोहन निर्धन बालक है, अत: उससे कह दियाह्न''तुम छोटे-से लोटे में दूध ले आना।''

मोहन ने माँ से दूध की बात कही, तो माँ ने कहाह्न''बेटा, घर में दूध कहाँ है? कोई बात नहीं, तू अपने गोपाल भैया से कहना, उनके पास गायें ही गायें हैं।''

दूसरे दिन जंगल में जब मोहन से गोपाल मिले, तो मोहन ने उनसे दूध माँगा।

गोपाल मुस्कराये, बोलेह्न''मैं जानता था कि तू दूध माँगेगा। मैं ले आया हूँ दूध।''

गोपाल ने उसे दूध से भरा हुआ एक छोटा लोटा पकड़ा दिया।

पाठशाला पहुँचते ही मोहन ने गुरु जी को बतलाया कि वह दूध ले आया है।

गुरु जी ने एक सेवक से कहाह्न''दूध किसी बरतन में डाल कर लोटा इसे वापस कर दो।''

लोटा छोटा था, अत: सेवक ने उसका दूध एक छोटे पात्र में डाला। पात्र भर गया। फिर वह दूसरे पात्र में बचा हुआ दूध डालने लगा। दूसरा भी भर गया। फिर तीसरे पात्र में...। सेवक हैरान था। लोटा खाली नहीं हो रहा था, पात्र-पर-पात्र दूध से भरते जा रहे थे।

घबड़ाया हुआ सेवक गुरु जी के पास गया और उन्हें सारी बात बतायी।

गुरु जी को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने मोहन से पूछाह्न''यह दूध कहाँ से लाया ?''

''मेरे गोपाल भैया ने दिया।''

''तेरे तो कोई भाई नहीं है,'' गुरु जी ने कहा।

''नहीं, है। वह मुझे रोज जंगल में मिलता है।''

गुरु जी मोहन के उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने पूछाह्न''कैसा है तेरा भाई?''

''वह सिर में मोर के पंख लगाता है, बाँसुरी बजाता है। हाथ में एक लकुटी लिये रहता है। बहुत सुन्दर लगता है मुझे।''

गुरु जी आँखें फाड़े हुए मोहन की बातें सुन रहे थे।

श्राद्ध का कार्यक्रम समाप्त हुआ। गुरु जी ने मोहन से पूछाह्लह्ल''तू अपने गोपाल से मेरी भेंट करा सकता है?''

''हाँ, हाँ, क्यों नहीं। आप मेरे साथ जंगल चलिए।''

गुरु जी मोहन के साथ जंगल गये। मोहन ने पुकार कर कहाह्लह्ल''गोपाल भैया आओ।''

तब उसे गोपाल भैया की आवाज सुनायी पड़ीह्लह्ल ''आज मैं नहीं आऊँगा। तुम अकेले थोड़े ही हो।''

''नहीं, भैया आओ। मेरे गुरु जी तुम्हें देखना चाहते हैं।''

गोपाल भैया आये। उन्होंने मोहन के गाल थपथपाये। लेकिन गुरु जी को वह नहीं दिखायी पड़ेह्लह्लगुरु जी को दिखायी पड़ा केवल प्रकाश।

गुरु जी को गोपाल के दर्शन हुए अवश्य; लेकिन जंगल में नहीं, मोहन के घर में।

मोहन के साथ गुरु जी उसके घर पहुँचे। मोहन के गोपाल मोहन की माँ की गोद में बैठे थे। माँ उनके सिर पर हाथ फेर रही थी।

बच्चो, एक दिन नहीं, दो दिन नहीं, नित्य ही गोपाल ने मोहन को दर्शन दिये और उसे अपना प्यार दिया। अपने हजार काम छोड़ कर उन्होंने उसे जंगल पार कराया। ऐसा दुर्लभ सुख उसके भाग्य में लिखा था।

□ □ □

सूचना

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चण्डीगढ़
शिवानन्द आश्रम की प्रथम वर्षगाँठ ७ व ८ मार्च २००९

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चण्डीगढ़ शाखा शिवानन्द आश्रम की प्रथम वर्षगाँठ ७ व ८ मार्च २००९ को मनाने जा रही है। इस अवसर पर क्षेत्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन का भी आयोजन प्रस्तावित है। परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परमाध्यक्ष, द डिवाइन लाइफ सोसायटी तथा शिवानन्द आश्रम ऋषिकेश से वरिष्ठ सन्त-महात्मा अपनी उपस्थिति से इस अवसर पर शोभा बढ़ायेंगे। इस समारोह में सभी भक्तों को हार्दिक रूप से आमन्त्रित किया जाता है।

पंजीकरण व जानकारी हेतु कृपया सम्पर्क करेंह्लह्ल

श्री एफ. लाल. कन्सल, अध्यक्ष, ०९८१४०१५२३७
डा. रमणीक शर्मा, सचिव, ०९८१४१०५१५४

पता : शिवानन्द आश्रम, चण्डीगढ़ शाखा,
प्लाट नं. २, सेक्टर २९ ए, चण्डीगढ़ह्लह्ल१६००३०, दूरभाष : ०१७२-२६३९३२२

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

शिवानन्द होम में सेवा-शुश्रूषा

गरीब व जरूरतमन्दों की सेवा के लिए द डिवाइन लाइफ सोसायटी हेडक्वार्टर्स ने शिवानन्द होम का संचालन प्रारम्भ किया है। जिन लोगों को चिकित्सा सहायता की आवश्यकता है लेकिन उनके पास कोई भी संसाधन नहीं हैं, कोई व्यक्ति उनकी सहायता देख-रेख के लिए नहीं है, आश्रय नहीं है, कोई देखभाल करने वाला नहीं है तथा जिनको समाज से अलग-थलग कर दिया है अथवा जो लोग संक्रामक बीमारियों से पीड़ित हैं ऐसे लोगों की सेवा के लिए शिवानन्द होम संचालित किया गया है।

एक रात लगभग १० बजे एक लड़के को होम में भर्ती किया गया। 'पप्पू नाम', 'पप्पू नाम', 'पप्पू नाम'ह्वह्वइतना ही वह बोल सकता था। लगभग १२ वर्ष का प्रतीत हो रहा था। आश्रम के समीप टहलता हुआ मिला, मानसिक रूप से अविकसित (मन्द बुद्धि), भूखा-प्यासा, लेकिन उसके चेहरे में उसकी मुस्कान की रौनक थी। जब से उसको यहाँ भर्ती किया गया तब से उसकी आँखों में एक भी आँसू नहीं दिखायी दिये। धीरे-धीरे वह खुल कर सामने आने लगा, दूसरे बच्चों के साथ खेलने लगा, अपने ही तरीके से उनसे बातचीत करने लगा और भजन-सत्संग में गाने व नाचने लगा। हर्षोल्लास का सौन्दर्य!

इस महीने कुछ और मरीजों को भर्ती किया गया। इनमें से दो टी. बी. के मरीज थे तथा उनमें से एक एच. आइ. वी. (HIV) पोजिटिव था और उसकी जाँघ की हड्डी में जख्म था। पूज्य गुरुदेव की छत्र-छाया में मेडिकल उपचार से अब दोनों धीरे-धीरे ठीक हो रहे हैं। ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः।

उसने अपनी कहानी रुक-रुक कर सुनायी कि उसे पंजाब में घर से कैसे निकाला गया। सड़क के किनारे अकेले रह रही थी। लोग उसकी मजाक उड़ा रहे थे। उसको प्रताड़ित करते थे। एक प्लास्टिक के थैले में रखे उसके सामान को उसके हाथ से जबरदस्ती छीन लिया। उसका मन विक्षिप्त हो गया। अब वह सोच भी नहीं सकती थी, कुछ भी नहीं कर सकती थी। त्रस्त, भयभीत, इधर-उधर भटक रही थी मानो नशे में धुत हो।

तब अचानक उसने देखा कि वह मुख्य सड़क हाइवे के बीचों-बीच पड़ी है। खून बह रहा है, टाँग टूटी हुई है और अपनी प्रिय शेराँवाली माता को पुकार रही है, प्रार्थना कर रही है। अचानक एक भाई, वास्तव में जो दुःख का सखा है वही सच्चा सखा है, उसको पास के एक अस्पताल में इलाज के लिए लाया। जब वह अपनी इस व्यथा को सुना रही थी, आँसुओं से उसकी आँखें भर गयी, तब वह फुसफुसाईह्वह्व ''मेरे बेटे, इस दुनिया में अब भी अच्छे लोग हैं।'' यह कह कर वह खामोश हो गयी तथा उसने पीठ मोड़ी, करवट ली और सो गयी।

उसके शब्दों ने दिल की गहराई तक छू लिया। इन कुछ ही शब्दों में कितनी आशा भरी हैह्वह्वकितना विश्वास भरा पड़ा है। एक ऐसे व्यक्ति के मुँह से आशा का सन्देश निकला जिसने इस जीवन के दूसरे पहलू का इतना कटु अनुभव किया है जो क्रूर नृशंस शक्तियों की शिकार हो गयी थी, लेकिन अपने मन को इनसे ग्रस्त नहीं होने दिया। मन में तब भी आशा व विश्वास!

मैं तुम्हारा नाम बदल दूँगा;
अब तुमको कोई भी
घायल, अकेला, त्रस्त एवं परित्यक्त नहीं कहेगा।
तुम्हारा नया नाम होगा :
विश्वास, भगवद्-मित्र,
जिसे मेरे दर्शन की लालसा है।
आत्मविश्वास, आनन्द, विजेता,
विश्वास, भगवद्-मित्र,
जिसे मेरे दर्शन की लालसा है।
(डी. जे. बटलर)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन यज्ञ का ६५ वाँ वार्षिक समारोह

सोसायटी के हेडक्वार्टर्स (मुख्यालय) में ३ दिसम्बर २००८ को अखण्ड कीर्तन महामन्त्र संकीर्तन का ६५ वाँ वार्षिक समारोह मनाया गया। इस महामन्त्र 'हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे' का सतत जप यज्ञ, प्रतिदिन चौबीसों घण्टे ३ दिसम्बर १९४३ से लगातार आश्रमवासियों, भक्तों तथा अतिथियों के द्वारा विश्व-शान्ति के लिए किया जा रहा है। सुन्दर सुसज्जित पालकी में श्री राम व श्री कृष्ण के चित्रों को रख कर महामन्त्र के संकीर्तन की धुन के साथ शोभायात्रा निकाली गयी, जो समाधि मन्दिर से हो कर हास्पिटल, अन्नक्षेत्र, गंगातट में श्री गुरुदेव कुटीर तथा कुछ दूर मुख्य राजमार्ग तक जा कर भजन हॉल में वापिस लौटी। मंगल आरती व प्रसाद-वितरण के बाद पूर्वाह्न का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। रात्रि-सत्संग में विशेष रूप से समूह में महामन्त्र का कीर्तन किया गया। पावन नाम की धुन से समाधि हॉल गूँज उठा और सत्संग में प्रत्येक व्यक्ति में इस महामन्त्र के आध्यात्मिक स्पन्दन प्रस्फुटित हो गये। आरती तथा प्रसाद-वितरण के पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ।

गीता जयन्ती महोत्सव

हिन्दू पंचांग के अनुसार मार्गशीर्ष के शुक्लपक्ष की एकादशी को भगवान् कृष्ण ने कुरुक्षेत्र की रणभूमि में भगवद्गीता के विश्व सन्देश को दिया। कहा जाता है कि यह युद्ध कलियुग के प्रारम्भ होने से ३६ वर्ष पहले हुआ। गीता सम्पूर्ण उपनिषदों की शिक्षाओं का सार है। इसमें मनुष्य के व्यावहारिक जीवन के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण हैं। इसकी शिक्षाएँ मानव की समस्त आकांक्षाओं की प्राप्ति करा देती हैं। भगवान् कृष्ण समग्र व्यक्तित्व हैं, अतः इनकी शिक्षाएँ भी समग्र हैं। उनके सन्देश को समझना अपने व्यक्तित्व को तदनुसार अनुकूलन करना है, यहाँ तक कि हम कृष्ण की तरह बनें।

८ दिसम्बर २००८ को सोसायटी के हेडक्वार्टर्स में गीता जयन्ती मनायी गयी। इस दिन ब्राह्ममुहूर्त में कीर्तन-भजन, विश्व-शान्ति के लिए शान्ति-पाठ, प्रार्थना और ध्यान किया गया।

९ बजे प्रातः समाधि मन्दिर में विशेष कार्यक्रम में भगवद्गीता के १८ अध्यायों का सामूहिक पाठ किया गया जिसमें आश्रमवासी संन्यासियों एवं साधकों ने भाग लिया। विभिन्न प्रकार के रंग-विरंगे फूलों से भगवान् कृष्ण के चित्र को समाधि मन्दिर की वेदी में सजाया गया। श्री विश्वनाथ मन्दिर में विशेष भगवद्गीता यज्ञ किया गया तथा इसके साथ ही समाधि मन्दिर में विश्व-कल्याण और विश्व-शान्ति के लिए भगवद्गीता के श्लोकों का सामूहिक पाठ किया गया। कृष्ण अष्टोत्तर अर्चना के बाद मंगल आरती की गयी और सभी को पावन प्रसाद वितरित किया गया।

रात्रि-सत्संग में आश्रम के वरिष्ठ अन्तेवासी श्री हरिहर सिंह जी ने भगवद्गीता की शिक्षाओं पर व्याख्यान दिया। विश्व-शान्ति के लिए प्रार्थना, आरती और प्रसाद-वितरण के साथ रात्रि-सत्संग सम्पन्न हुआ।

पावन श्री दत्तात्रेय जयन्ती

भगवान् श्री दत्तात्रेय का पवित्र अवतार-दिनह्ह जन्म-दिन आश्रम में दिनांक १२ दिसम्बर को मनाया गया। यह उत्सव आश्रम के परिसर में स्थित श्री दत्तात्रेय टेकरी पर सम्पन्न हुआ कि जहाँ दीर्घ समय से भगवान् श्री दत्तात्रेय का पुनीत छोटा मन्दिर है। परम्परागत उपचारयुक्त पूजा अभिषेक, अर्चना और आरती से की गयी। एकत्रित आश्रम अन्तेवासियों, भक्तों तथा अतिथियों-मुलाकातियों द्वारा संकीर्तन और भजन-कीर्तन किये गये। इस वृक्षों से घिरी वन-स्थली के मन्दिर में वन-भोजन के रूप में प्रसाद-वितरण सहित कार्यक्रम का समापन हुआ।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय ने वर्ष २००८ के अक्तूबर-नवम्बर की माहावधियों में उड़ीसा तथा गुजरात राज्यों में सांस्कृतिक भ्रमण किया।

स्वामी जी महाराज ने माह अक्तूबर के दिनांक १७ से दिनांक १९ की दिनावधि में उड़ीसा राज्य के बलांगिर में सम्पन्न 'श्रीमद्भागवत धर्म-सम्मेलनी' में निज उपस्थिति दी। स्वामी जी ने प्रतिदिन के विविध सत्रों में प्रतिभागी हो कर 'भागवत धर्म के स्वरूप और उसकी विशेषता', 'शब्द-ब्रह्म भागवत तथा दारु-ब्रह्म जगन्नाथ', 'युवानों के लिए श्रीमद्भागवत की सम्बद्धता', 'विश्व-मैत्री की स्थापना में भागवत की अद्वितीयता' इत्यादि भिन्न विषयों पर प्रवचन दिये। परिषद् में सहस्रों भक्त उपस्थित थे। परिषद् के अन्तर्गत आयोजित 'व्यक्तित्व विकास शिविर' में भी स्वामी जी ने युवानों को सम्बोधन किया। इस युवा-शिविर में स्थानिक स्कूलों तथा कॉलेजों के अनेक छात्र प्रतिभागी बने। प्रतिभागियों हेतु कार्यक्रम अति सफल और हितकर रहे। पुरी के परम पूज्य बाबा श्री चैतन्यचरणदास जी महाराज ने परिषद् का संयोजन किया तथा उसमें परम पूज्य श्री कल्याणदास जी महाराज जैसे सन्त उपस्थित रहे।

स्वामी जी ने दिनांक २० अक्तूबर को बलांगिर शाखा से भेंट की। शाखा को एक स्थानिक भक्त द्वारा नगर में ही भूमिदान प्राप्त हुआ तथा उक्त दिन को भूमिपूजा निश्चित की गयी थी। स्वामी जी ने समारोह में भाग लिया और प्रासंगिक सत्संग में प्रवचन भी दिया। अनेक संनिष्ठ भक्त कार्यक्रम में उपस्थित थे।

स्वामी जी माह अक्तूबर के दिनांक १२ से दिनांक १६ की और दिनांक २३ से दिनांक ३० की अवधियों में बालिगुआली-स्थित 'चिदानन्द हर्मिटेज शान्ति आश्रम' में रहे और उसके कार्य-व्यवहार को देखा तथा कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यों की सम्पन्नता की।

दिनांक ३१ अक्तूबर से दिनांक ३ नवम्बर पर्यन्त स्वामी जी महाराज ने भुवनेश्वर के खण्डगिरि-स्थित 'स्वामी शिवानन्द सेन्टेनरी बॉयज् हाईस्कूल' की मुलाकात ली। इस हाईस्कूल के स्वामी जी महाराज परमाध्यक्ष हैं। स्वामी जी महाराज ने दिनांक ३१ अक्तूबर को स्कूल प्राधिकारियों द्वारा अध्यापकों के लिए आयोजित अध्ययन-गोष्ठी में तथा दिनांक १ नवम्बर को आयोजित मैनेजिंग कमिटी की सभा में निज उपस्थिति दी। स्वामी जी ने छात्रों तथा गृहपतियों को भी अलग रूप से सम्बोधित किये। स्वामी जी उनके निवास की अवधि में उनसे मिलनोत्सुक भक्तों को भी मिले।

दिनांक ४ नवम्बर को स्वामी जी महाराज ने गुजरात में स्थित भगवान् श्रीकृष्ण जी के पवित्र धाम द्वारिकाह्नजो भारत के चार प्रमुख यात्राधामों में से एक हैह्नकी भेंट करके भगवान् श्री द्वारिकाधीश के पवित्र दर्शन किये। स्वामी जी दिनांक ५ को सम्पन्न ध्वजारोहण-विधि में भी प्रतिभागी हुए।

दिव्य जीवन संघ की राजकोट शाखा ने दिनांक ५ नवम्बर को राजकोट में आल इंडिया रेडियो, राजकोट के उपक्रम से स्वामी जी का भाषण आयोजित किया था। स्वामी

जी ने 'Role of Spirituality at the Present Day' विषयक प्रवचन दिया। स्वामी जी ने दिनांक ६ को, उनके आगमन पर दिव्य जीवन संघ की इस शाखा द्वारा निज परिसर में आयोजित विशेष सत्संग में उपस्थित रह कर प्रवचन दिया। अनेक भक्त उसमें प्रतिभागी हुए।

पश्चात् स्वामी जी महाराज ने सुरेन्द्रनगर को प्रस्थान किया। स्वामी जी ने शाखा की सुवर्ण-जयन्ती के उपलक्ष्य में दिनांक ६ नवम्बर से दिनांक ९ नवम्बर पर्यन्त आयोजित साधना-शिविर में निज उपस्थिति दी। उसमें गुजरात राज्य की सभी शाखाओं के तथा राज्य के अतिरिक्त अन्य राज्यों के भक्तों ने उपस्थिति दी। उत्सव में शाखा सुवर्ण-जयन्ती वर्ष मना रही है। नित्य समीपवर्ती ग्रामों में गौओं को चारा देने, चींटियों को आटा देने, पक्षियों को दाने देने जैसी गतिविधियाँ आरम्भित की गयीं तथा 'साधना-शिविर' उत्सव की परमोच्च गतिविधि थी। शाखा द्वारा शिविर के प्रतिभागियों को निःशुल्क वितरण करने हेतु दस आध्यात्मिक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। शिविर का विशेष तथा अद्वितीय अभिलक्षण यह था कि प्रतिभागियों से कोई शुल्क नहीं लिया गया था और शिविर सम्पूर्ण निःशुल्क थी। स्वामी जी ने दिनांक ७ से दिनांक ९ पर्यन्त प्रभातीय सभाओं में एवं पूर्वाह्न सभाओं में प्रवचन देने के आधिक्य में प्रश्नोत्तर सभा में प्रश्नों के उत्तर दिये। साधना-शिविर अति सुन्दर आयोजित था और प्रतिभागियों के लिए पूर्ण हितकर हो कर अति सफल रहा।

स्वामी जी ने सुरेन्द्रनगर के डा. लक्ष्मीचन्द मूलजीभाई ध्रुव बालाश्रम की भी मुलाकात ली। यह बालाश्रम अनाथों की शिक्षा सहित समग्र आवश्यकताओं की देखभाल करके एक अद्‌भूत कार्य सम्पन्न कर रहा है।

स्वामी जी बालाश्रम की देखभाल के जिम्मेदार मुख्याधिपति आदरणीय श्री नागजीभाई देसाई जी को भी मिले। मानवता और प्रेमसहित बालकों के साथ व्यवहार की सम्पन्नता से स्वामी जी पर अति सुन्दर प्रभाव पड़ा और उन्होंने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

दिव्य जीवन संघ की सुरेन्द्रनगर शाखा ने गुरुदेव के पवित्र मिशन के विस्तार तथा स्थानिक लोगों के हितार्थ, स्वामी जी महाराज के लिए कुछेक ग्राम्यविस्तारों में कार्यक्रम आयोजित किये थे। दिनांक १० नवम्बर को स्वामी जी ने बोटाद ग्राम से भेंट की तथा श्री परमानन्द जी परमार के निवास-स्थान में 'शिवानन्द सत्संग केन्द्र' का उद्‌घाटन किया। ग्राम्यजनों की प्रासंगिक सभा में स्वामी जी ने प्रवचन दिया।

स्वामी जी ने दिनांक ११ को कठडा ग्राम की भी मुलाकात ली कि जहाँ 'शिवानन्द सत्संग केन्द्र' कार्यान्वित है। यह एक आदर्श ग्राम है जिसके जन सामाजिक जीवन में उदाहरण रूप आचरण कर रहे हैं। उनमें से कोई भी उन्मादक द्रव्य या पदार्थ अथवा मद्य, शराब या गांजा जैसे तन्द्राकारी-मूर्छाकारी किसी भी चीजों का जो कि इस ग्राम में पूर्णतया प्रतिबन्धक हैंह्नह्नकदापि सेवन नहीं करता। इस ग्राम में इन सब पदार्थों के विक्रय पर भी सम्पूर्ण प्रतिबन्ध है। इससे भी अधिक प्रशंसनीय वास्तविकता यह है कि ग्राम्यजनों ने इसका सम्पूर्ण ध्यान रखा है कि गत बीस वर्षों से एक भी मुकदमा न्याय की अदालतों में पहुँचा नहीं है और ग्राम में ही सब वादों का मैत्री, सौहार्दपूर्वक शमन होता है। ग्रामजनों में पूर्णतया एकता, समझौता, सहभावना तथा भ्रातृत्व है। स्वामी जी ने सत्संग-केन्द्र में आयोजित सत्संग में निज उपस्थिति दी, भक्तों से मुलाकात की तथा उनको सम्बोधित किये। वहाँ सम्पन्न हो रहे भागवत-सप्ताह में भी स्वामी जी संयुक्त-संयोजित हुए और एक प्रवचन दिया।

अपराह्न में स्वामी जी ने वर्ष १९५० से १९५९ के मध्य आरम्भित गुजरात राज्य की तृतीय शाखाह्नह्नध्रांगध्रा शाखा से भेंट की। स्वामी जी ने उनके आगमन पर आयोजित सत्संग में भक्तों को सम्बोधन किया। स्वामी जी लाटुडा ग्राम में भी गये तथा स्थानिक हनुमान् मन्दिर में भक्तों को मिले। पुरुषों के लिए वेदान्त-ग्रुप तथा महिलाओं के लिए सत्संगह्नह्नइस प्रकार के दो अलग सत्संग-ग्रुप में ग्रामजन दैनिक सत्संग सम्पन्न कर रहे हैं। स्वामी जी ने उभय ग्रुप के संयुक्त सत्संग में उपस्थित भक्तों को प्रवचन दिया।

दिनांक १२ नवम्बर को स्वामी जी ने वांकानेर शाखा की मुलाकात ली। यह शाखा वर्ष १९५५ में आरम्भित हो कर

गुजरात राज्य की द्वितीय पुरानी शाखा है। स्थानिक श्री रघुनाथ मन्दिर में सत्संग का आयोजन किया गया था। भक्तों ने बड़ी संख्या में एकत्रित हो कर सुन्दर प्रतिभाव दिया। स्वामी जी ने सत्संग में प्रवचन दिया। स्वामी जी महाराज की इन पुरानी शाखाओं की मुलाकातों से भक्तों को सुन्दर प्रेरणा मिली तथा इन शाखाओं के पुनर्जीवन के लिए सुन्दर भूमिका प्रदान की। ये सब कार्यक्रम दिव्य जीवन संघ की सुरेन्द्रनगर की शाखा के सचिव श्री जेसिंगभाई सुर के सोत्साह प्रारम्भ, रुचि और प्रयत्नों से और श्री महेन्द्रभाई बुच तथा सुरेन्द्रनगर के अन्य भक्तों की सहाय से आयोजित हुए।

स्वामी जी ने अहमदाबाद में दिनांक १३ नवम्बर को समीपवर्ती भाडज ग्राम में आयोजित सत्संग में निज उपस्थिति दी। इस कार्यक्रम का आयोजन आश्रम के अति वरिष्ठ भक्त प्रोफेसर नरेन्द्र प्रसाद शुक्ल के द्वारा हुआ। उन्होंने दिव्य जीवन संघ, अहमदाबाद शाखा के उपक्रम से इस ग्राम को दत्तक लिया है। वे इस ग्राम की नियमित मुलाकात ले कर चिकित्सिकीय तथा अन्य सहाय देते हैं एवं समय-समय पर आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन करते हैं। इस सत्संग में बहुसंख्य ग्राम्यजन एकत्रित हुए थे। स्वामी जी ने भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति तथा भक्ति विषयक प्रवचन दिये।

आदरणीय श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज स्वामी जी के गुजरात के सब कार्यक्रमों में साथ रहे और उनका यह साथ अति सहायक हुआ।

स्वामी जी ने दिनांक १६ नवम्बर को ब्रह्मलीन परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को श्रद्धांजलि देने हेतु, 'स्वामी शिवानन्द मेमोरियल इन्स्टीट्यूट, पंजाबी बाग, नई दिल्ली' में आयोजित एक सभा में भाग लिया तथा परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के अनुकरणीय और दृष्टान्तरूप जीवन विषयक प्रवचन दिया।

विशेष विज्ञप्ति

दिव्य जीवन संघ के अन्तर्राष्ट्रीय परमाध्यक्ष विश्वविश्रुत हमारे परम आराध्य ब्रह्मलीन परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के अति दुर्लभ सान्निध्य से प्राप्त मार्मिक अनुभवों, उनके आत्मोन्नयन, श्रेयमार्गोभिमुख आध्यात्मिकता से युक्त सर्वांगीण आदर्श जीवन यापन सम्बन्धी प्रभावी उपदेश, आदेश, सन्देश तथा उनके महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से निःसृत शिक्षाप्रद, आनन्दप्रद, रोचक एवं प्रेरक प्रसंगों तथा बहुविध साधना सम्बन्धी मधुर स्नेहिल संस्मरणों की लिखित अभिव्यक्ति के संकलन का शुभारम्भ अनेक सद्शिष्यों, भक्तों, साधकों तथा शुभेच्छुकों के विशेष हार्दिक अनुरोध-आग्रह को ध्यान में रखते हुए किया गया है। यदि आप इसमें प्रतिभागी होना चाहते हैं तो उपरोक्त विषयों से सम्बन्धित आपकी सारगर्भित विषय-सामग्री (टाइप करके भेजें तो उत्तम होगा) सन् २००९ के जनवरी माह के अन्त तक अवश्य पहुँच जानी चाहिए। E-mail: generalsecretary@sivanandaonline.org द्वारा "Sharing my memory with Swami Chidananda" विषय से भेजें। जो डाक विभाग द्वारा अपनी विषय-सामग्री भेजना चाहते हैं, वे लिफाफे के बाहर ''स्वामी चिदानन्द-सन्निधि में मेरे संस्मरण'' (Sharing my memory with Swami Chidananda) लिख कर निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें :

द प्रेजीडेंट, द डिवाइन लाइफ सोसायटी

शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के मानद ट्रस्टी-न्यासी, उपाध्यक्ष श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज का सांस्कृतिक भ्रमण

दिव्य जीवन संघ हांगकांग शाखा के योग केन्द्र ने दिनांक ९ से दिनांक २१ नवम्बर तक आयोजित उनके वार्षिक योग शिविर में भाग लेने हेतु श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी को दिये उदार आमन्त्रण के प्रतिभाव में वे दिनांक ९ नवम्बर २००८ को हांगकांग गये। दिनांक ११ नवम्बर को आयोजित सार्वजनिक प्रवचन में स्वामी जी ने 'हमारे दैनिक जीवन में कर्मयोग' विषयक व्याख्यान दिया। स्थानिक तथा दिव्य जीवन संघ हांगकांग शाखा के योग केन्द्र की सहायता से आदरणीय स्वामी जी ने प्रवचन किया और हांगकांग पोलिटेकनिक युनिवर्सिटी के परिसर में स्थित कन्स्यूलेट जनरल ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित योग-संवर्धन गतिविधियों के अन्तर्गत हठयोग वर्ग का संचालन किया। दिनांक १३ को, कुछेक समिति सदस्यों सहित स्वामी जी लाँटेउ टापु की पो लीन मॉनेस्टरी के विशाल बुद्ध देखने गये। दिनांक १४ को स्वामी जी ने योगासन तथा प्राणायाम सिखाने की तालीम लेने वाले योग शिक्षकों को प्रमाणपत्र दिये। दिव्य जीवन संघ की शाखा ने निज वार्षिक योग परिसंवाद चुंग चाऊ टापु पर रखा। परिसंवाद का विषय था 'कर्मयोग तथा हमारे मन की शुद्धि'। प्रार्थना-स्तोत्रों, ध्यान से प्रभातीय सभा शुरू हुई, जिसके अनुसरण में योगासन तथा प्राणायाम के वर्ग सम्पन्न हुए। स्वामी जी ने दिये शृंखलाबद्ध प्रवचनों के पश्चात् प्रश्न-उत्तर की सभाएँ हुई। सब ही प्रतिभागियों ने स्वामी जी द्वारा साम्य-दर्शक कथा-उपकथाओं द्वारा प्राचीन ज्ञान समझाने के लिए उनके आभार व्यक्त किये। दिनांक १७ से स्वामी जी ने योग-केन्द्र में 'स्वामी चिदानन्द जी के जीवन तथा उपदेश', 'गुरुभक्ति', 'कर्मयोग' विषयक प्रवचन दिये। स्वामी जी ने शाखा-सदस्यों को पादुका-पूजा की विधि बतायी जिससे वे प्रतिमाह तथा महत्त्वपूर्ण प्रसंगों पर उसे चालु रखें। श्री हरि जी ने अनुवाद तथा कार्यक्रमों के आयोजन में स्वामी जी की सहायता की। आदरणीय स्वामी चिन्मय मिशन के गीता-अध्ययन ग्रुप ने, स्वामी जी के हांगकांग के निवास-अवधि में अनेक भक्तों के निवासस्थानों पर प्रभातीय प्रवचन आयोजित किये। स्वामी जी ने दिनांक २१ नवम्बर को हांगकांग से प्रयाण किया, दो दिन सिंगापुर में रहे, श्री एच. आर. भोंसले जी तथा आर. के. सुलेरी जी द्वारा आयोजित सत्संग में उपस्थिति दी तथा दिनांक २४ नवम्बर २००८ को मुख्यालय में पहुँचे।

परम पूज्य श्री स्वामी शंकरानन्द जी द्वारा स्थापित साउथ आफ्रिका के जोहानिसबर्ग समीप 'श्री आदि शंकर आश्रम' ने दिनांक १ दिसम्बर से दिनांक ७ दिसम्बर को निज रजत-जयन्ती का उत्सव मनाया। श्री आदि शंकर आश्रम के वर्तमान परमाध्यक्ष श्री स्वामी शिवशंकरानन्द जी ने, श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी को, उन कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु आमन्त्रित किये। माह जुलाई में परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की अनुमति से स्वामी जी ने साउथ आफ्रिका में दस दिवसीय कार्यक्रमों में जाने की संमति दी। स्वामी जी ने श्री आदि शंकर आश्रम में प्रभातीय तथा सान्ध्य सत्संगों में उपस्थिति दी तथा जप-साधना, स्वाध्याय आदि विषयक प्रवचन दिये। दिनांक ३ दिसम्बर को आदरणीय श्री स्वामी शंकरानन्द जी महाराज की महासमाधि के शुभ ७ वें वार्षिक दिन को एक विशेष सत्संग आयोजित हुआ। आश्रम के मुख्यालय के स्वामी जी की उपस्थिति देख कर जोहानिस बर्ग की, 'शिवानन्द स्कूल ऑफ योग' ने दिनांक ४ दिसम्बर को सत्संग का आयोजन किया। उसमें स्वामी जी ने 'दैनिक जीवन में ध्यान' विषयक प्रवचन दिया। रजत-जयन्ती का मुख्य उत्सव ७ दिसम्बर २००८ को था। स्वामी जी ने पूजनीय आदि शंकराचार्य, पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज द्वारा प्रसारित प्राचीन ज्ञान की महिमा को साउथ आफ्रिका के उत्सुक साधकों, नागरिकों को आदरणीय श्री स्वामी शंकरानन्द ने किस प्रकार पहुँचायी, इस विषयक प्रवचन दिया। आदरणीय श्री स्वामी शिवशंकरानन्द जी की विनंती पर, स्वामी जी ने श्री आदि शंकर आश्रम की रजत-जयन्ती के शुभ उत्सव की स्मृति ताजी रखने हेतु एक पुस्तिका का विमोचन किया। महोत्सव सुआयोजित था और साउथ आफ्रिका के बहुसंख्य भक्तों ने उसमें उपस्थिति दी।

दिव्य जीवन संघ के साउथ आफ्रिका देश के शिवानन्द आश्रम, रिझर्वीयर हिल्स, डर्बन के उदार आमन्त्रण से स्वामी जी ने दिनांक १० दिसम्बर २००८ को आदरणीय श्री स्वामी सहजानन्द जी की समाधि के प्रथम वार्षिक दिन को निज उपस्थिति दी। साउथ आफ्रिका के गरीब तथा निर्धन नागरिकों एवं उसके उत्सुक आध्यात्मिक साधकों को, पूज्य स्वामी सहजानन्द जी महाराज द्वारा किस प्रकार शक्तिशाली सहाय दी गयीह्नइस विषयक स्वामी जी ने प्रवचन दिया। ऋषिकुमार डा. विद्यानन्द जी ने श्रोताओं को स्वामी जी का परिचय दिया। प्रसंगोचित उन्होंने श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी को श्री स्वामी सहजानन्द जी के द्वारा रचित 'भजन और कीर्तन' और 'मध्यरात्रि के उपाख्यान' नामक दो पुस्तकों का विमोचन करने की विनंती की।

पूज्य स्वामी सहजानन्द जी महाराज के ९५ वर्षीय स्कूल अध्यापक आदरणीय श्री सी. कुप्पुस्वामी ने प्रसंगोचित उद्‌बोधन किया। इस सुआयोजित उत्सव में साउथ आफ्रिका की विविध शाखाओं के तीन सहस्र भक्तों ने निज उपस्थिति दी। मुख्यालय के स्वामी द्वारा दिये गये ज्ञानपूर्ण प्रवचन से सभी भक्तों को प्रसन्नता और प्रशंसा की अनुभूति हुई।

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज 'इन्दिरा गान्धी नेशनल फॉरैस्ट एकाडेमी, पोस्ट ऑफिस न्यू फॉरैस्ट, देहरादून' के निर्देशकश्री द्वारा वर्ष २००७-२००९ की टुकड़ी के आई. एफ. एस. प्रोबेशनर्स को 'Ethical Foundation and Spiritual Quotient' विषयक प्रवचन दे कर सम्बोधित करने हेतु फॉरैस्ट एकाडेमी में निमन्त्रित किये गये। तदनुसार श्री स्वामी जी ने दिनांक २७ नवम्बर २००८ को एकाडेमी की मुलाकात ली और परस्पर विचार-विनिमय युक्त एक प्रवचन किया।

पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों के आधिक्य में फैकेल्टी-प्रभागीय सदस्यों ने भी प्रवचन में उपस्थिति दी। प्राचीन शास्त्रों में से अवतरण देते हुए तथा पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन तथा उपदेशों से श्री स्वामी जी ने व्यावसायिक कारकीर्दि की सफलता एवं सुखी जीवन के लिए नैतिक जीवन का महत्त्व समझाया।

श्री स्वामी जी ने आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी सह, दिव्य जीवन संघ की चण्डीगढ़ तथा पंचकुला शाखाओं की भेंट की। इस मुलाकात के दौरान चण्डीगढ़ तथा पंचकुला शाखाओं ने संयुक्त रूप से विविध स्थानों पर सत्संग आयोजित किये।

दिनांक ६ दिसम्बर सन्ध्या को तथा दिनांक ७ दिसम्बर प्रभात में निवासीय सत्संग रखे गये। चण्डीगढ़ शाखा ने भी प्रभात के १०-३० से ले कर मध्याह्न के १२-३० पर्यन्त शाखा-इमारत के शिवानन्द आश्रम में सत्संग आयोजित करके उनके अनुसरण में 'नारायण सेवा' सम्पन्न की। श्री स्वामी जी ने 'The Association for Social Health' संस्था जो कि हरियाणा शाखा (आशियाना) पंचकुला स्थित हैह्नह्नकी मुलाकात ली। आशियाना विविध अन्य भी समाज-कल्याण की गतिविधियों की सम्पन्नता सहित अनाथों के लिए एक स्कूल का भी संचालन कर रही है। स्वामी जी ने इस स्कूल की भेंट ले कर बालकों के साथ सत्संग किया।

दिनांक ७ की सन्ध्या के ७-०० से लेकर दिनांक ८ के प्रभात के ७-०० पर्यन्त चण्डीगढ़ शाखा द्वारा विश्व-शान्ति के लिए अखण्ड महामन्त्र कीर्तन शाखा-इमारत में आयोजित किया गया। शाखा ने गीता जयन्ती को सायंकाल के ५-०० से ले कर रात्रि के ८-३० पर्यन्त श्रीमद् भगवद् गीता का पारायण आयोजित किया। श्री स्वामी जी ने पारायण में भाग लिया तथा भगवद् गीता के तत्त्वज्ञान विषयक प्रवचन भी दिया।

दिनांक ९ दिसम्बर को स्वामी जी ने ककड़ माजरा स्थित 'श्री स्वामी शिवानन्द कम्यूनीटी सेन्टर'ह्नह्नजहाँ स्थानिक बालकों को कम्प्यूटर प्रयोग करने में तालीम निःशुल्क दी जाती हैह्नह्नकी मुलाकात ली। श्री स्वामी जी ने बालकों के साथ विचार-विनिमय किया और सत्संग भी किया। इस मुलाकात ने तथा विविध स्थलों पर चार दिवसीय कार्यक्रमों ने भक्तों को एकत्रित करने में और पूज्य गुरुदेव का सन्देश प्रसारित करने में सहाय की।

आवश्यक सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश में अतिथियों एवं अभ्यागतों-आगन्तुकों के स्वागतार्थ वर्तमान समय की माँग तथा सरकारी एजेंसियों की अपेक्षाओं-आदेशों के अनुसार हम कुछ नियमों-शर्तों के परिपालन के लिए बाध्य हैं।

शिवानन्द आश्रम मूलतः संन्यास आश्रम/एक आध्यात्मिक संस्था है, जहाँ के अन्तेवासी संन्यासी, ब्रह्मचारी और आध्यात्मिक साधना में रत साधक हैं। वे निष्काम सेवा करते हैं और दिनानुदिन के कार्यक्रमों में सामूहिक रूप से सम्मिलित हो कर तथा अपनी आध्यात्मिक साधना की तरंगों से तरंगित वातावरण को तथा आश्रम की पवित्रता को बनाये रखने में प्रयत्नशील रहते हैं।

आश्रम में कुछ समय ठहरने वाले अतिथियों एवं अभ्यागतों से आशा की जाती है कि वे आश्रम के आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल ही अपनी आश्रमवास-अवधि का आध्यात्मीकरण करें। पर्यटकों, सप्ताहान्त छुट्टी मनाने वालों तथा मात्र मौजमस्ती करने वालों को आश्रम में ठहरने की सुविधा प्राप्त करने की प्रत्याशा नहीं रखनी चाहिए। वे किसी अन्य स्थान पर ठहरें और आश्रम-दर्शनार्थ तथा प्रार्थना, ध्यान तथा योग आदि के लिए ही आश्रम में आयें।

अतिथियों तथा अभ्यागतों के लिए दिशा-निर्देशन :

(१) अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की पूर्व-अनुमति प्राप्त करने के लिए महासचिव को पत्र, ई-मेल आदि के द्वारा पर्याप्त समय पूर्व अग्रिम सूचना देनी होगी, ताकि वे रवाना होने से पूर्व ही अनुमति-पत्र प्राप्त कर सकें। आश्रम-वास की अनुमति-प्राप्ति के लिए आवेदन-पत्र का प्रारूप निम्नलिखित अनुसार होगा :

१. पूरा नाम
२. लिंग और आयु
३. राष्ट्रीयता
४. निवास-स्थान/घर का पूरा पता
५. ई-मेल का पता
६. कोड सहित टेलीफोन/सैल नम्बर
७. पासपोर्ट/फोटो आइडी टाइप और नम्बर*
८. आपके परिचित आश्रमवासी का नाम/सम्बन्ध
९. व्यवसाय-नौकरीपेशा तथा संक्षिप्त आध्यात्मिक पृष्ठभूमिका
१०. क्या आप दिव्य जीवन संघ से सम्बद्ध हैं? तो किस रूप में, कैसे?
११. आगमन का उद्देश्य
१२. आपके साथ आने वालों की संख्या (उनके नाम, लिंग और आयु उल्लेख सहित)
१३. आगमन की तिथि-तारीख
१४. प्रस्थान की तिथि-तारीख

---

* स्वागत-कार्यालय (Reception Office) में पहुँचने पर आपको पासपोर्ट अथवा कोई फोटो पहचान-पत्र अवश्यमेव प्रस्तुत करना होगा। यह सरकारी नियमानुसार आवश्यक जरूरत है।

(२) आश्रम-आवास के लिए फोन पर अनुमति लेना मान्य नहीं होगा।

(३) अतिथियों तथा अभ्यागतों को स्वागत-कार्यालय द्वारा जो आवास-स्थान दिया जायह्नहपूर्ण सहयोग सहित उसके साथ उन्हें एडजस्ट करना होगा।

(४) आश्रम-वास करते हुए अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम के समस्त कार्यक्रमों में उपस्थित रहना होगा; विशेष रूप से प्रातः ध्यान-कक्षा में और रात्रि-सत्संग में।

(५) अतिथियों-अभ्यागतों की अपने मूल्यवान् सामान का ध्यान स्वयमेव रखना होगा। किसी भी प्रकार की हानि-नुकसान के लिए आश्रम-प्रबन्धन उत्तरदायी नहीं होगा।

(६) स्वागत-कार्यालय का नियत कार्य समय प्रातः ६ बजे से रात्रि १० बजे तक है। रात्रि १० बजे से प्रातः ६ बजे तक कार्यालय बन्द रहेगा। अतः अतिथियों-अभ्यागतों से अनुरोध है कि वे अपनी यात्रा का कार्यक्रम इस प्रकार सुनिश्चित करें कि वे स्वागत-कार्यालय के कार्य-समय के अन्दर ही आश्रम में पहुँचें।

(७) बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति लिये आश्रम में ठहरने हेतु आने वाले अतिथियों तथा अभ्यागतों के अनुरोध पर गौर नहीं किया जायेगा।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के लिए सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश आने वाले अतिथियों-अभ्यागतों की सिफारिश करने वाली शाखाओं से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त दिशा-निर्देशों का अनुपालन करें।

शाखाएँ अपने सदस्यों/भक्तों का आश्रम मुख्यालय में आने के लिए सिफारिश सदा कर सकती हैं, किन्तु पूर्व अग्रिम सूचना देने और अनुमति-स्वीकृति-प्राप्ति सुनिश्चित हो।

बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति प्राप्त किये शाखाओं से सिफारिशी पत्र लाने पर भी मुख्यालय में आवास-उपलब्धि हेतु आने वाले सदस्यों, भक्तों, अतिथियों और अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की (स्वीकृति) अनुमति प्राप्त नहीं हो सकेगी।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

सूचना

महाशिवरात्रि

पवित्र महाशिवरात्रि शिवानन्दनगर में २३ फरवरी २००९ को मनायी जायेगी। श्री विश्वनाथ मन्दिर में दिन में और सारी रात्रि समवेत स्वर में पंचाक्षर-मन्त्र ('ॐ नमः शिवाय') के अखण्ड कीर्तन के अतिरिक्त अभिषेक, सहस्रनामार्चना तथा रुद्र, नमक, चमक, पुरुषसूक्त, नारायणसूक्त और श्रीसूक्त के पाठ के साथ भव्य पूजा की जायेगी। इस व्रत में सम्मिलित होने के विचार से हमें यथेष्ट समय पूर्व अवगत करा कर आने वाले भक्तों का हार्दिक स्वागत है। उन्हें अपने आने की सूचना 'जनरल सेक्रेटरी, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द आश्रम, पो. शिवानन्दनगरह्न२४९ १९२, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड' को दे देनी चाहिए। जो स्वयं न सम्मिलित हो सकें, वे 'व्यवस्थापक, मन्दिर डिपार्टमेन्ट, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द आश्रम, पो. शिवानन्दनगरह्न२४९ १९२, टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड' को अपनी इच्छा से सूचित कर देंगे, तो उनके नाम से भी पूजा की जायेगी।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

विशेष गतिविधियाँ

१ : परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की महासमाधि

परम पूज्य श्री स्वामी जी की महासमाधि तथा षोडशी और गुरु-जयन्ती पर आयोजित विशेष गतिविधियों के हमें कुछेक अधिक अहवाल प्राप्त हुए हैं।

छत्रपुर (उड़ीसा): दिनांक २६ अगस्त से दिनांक २८ अगस्त पर्यन्त महामृत्युंजय-मन्त्र जप। दिनांक २८ को प्रभात के ९-०० बजे प्रारम्भ किये गये अखण्ड जप और पूज्य स्वामी जी की महासमाधि के वर्तमान प्राप्त होते, प्रार्थना-सभा। प्रभातीय तथा सान्ध्य-सभाओं के दस दिवसीय कार्यक्रम, मन्त्र-जप, श्री सुन्दरकाण्ड पारायण; श्रीमद् भगवद् गीता तथा श्रीमद् भागवतम् के ११ वें अध्याय के स्वाध्याय; दिनांक ५ तथा १२ को नगर-संकीर्तन; दिनांक ७ सितम्बर को मरीजों को और दिनांक ८ तथा १२ को स्कूल-छात्रों को फल, बिस्कुट तथा ज्ञान-प्रसाद का वितरण; जीवदया यज्ञह्वगौएँ, प्राणियों, पक्षियों और कीट आदि को खाद्यान्न; प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा प्रवचन। षोडशी को नगर-संकीर्तन, पादुका पूजा, ब्राह्मणों को भोजन तथा निर्धनों को वस्त्रों का एवं दक्षिणा-दान।

रंगबेडा (उड़ीसा): दिनांक ११ सितम्बर को एक स्थानिक स्कूल के छात्रों तथा अध्यापकों को मिठाइयाँ, फल का वितरण और दक्षिणा-दान तथा दिनांक १२ को दोनों स्कूलों में प्रसाद-वितरण।

हांगकांग (चीन) : दिनांक २७ अगस्त को २० प्रतिभागियों सहित एक घण्टा महामृत्युंजय-जप और ८० प्रतिभागियों सहित दिनांक ३० अगस्त को भी एक घण्टे पर्यन्त महामृत्युंजय-जप, तथा ४२ प्रतिभागियों सहित दिनांक ३१ अगस्त को मन्त्र-जप।

२ : गुरु-जयन्ती

छत्रपुर (उड़ीसा) : शिवानन्द जयन्तीह्वनगर-संकीर्तन, शालेय छात्रों को फल और मिठाइयों का वितरण। चिदानन्द जयन्तीह्वप्रभातफेरी, पादुका पूजा, श्री रामायण में से पठन, भगवद् गीता का स्वाध्याय, छात्रों को फलों का और ज्ञान-प्रसाद वितरण, निर्धनों को भोजन, आवश्यकता युक्त २१ व्यक्तियों को वस्त्र-दान, स्वामी जी के जीवन विषयक प्रवचन।

रंगबेडा : शिवानन्द जयन्तीह्वविशेष सत्संग। चिदानन्द जयन्तीह्व१६ जरूरतमन्द व्यक्तियों को वस्त्रों तथा कैश का दान, समस्त ग्रामजनों द्वारा प्रसाद-सेवन।

३ : साधना शिविर, सुरेन्द्रनगर

दिव्य जीवन संघ की सुरेन्द्रनगर (गुजरात) शाखा की स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव के अन्तर्गत, शाखा द्वारा दिनांक ७, ८, ९ नवम्बर को तीन दिवसीय साधना शिविर का आयोजन हुआ। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी रामराज्यम् जी, आदरणीय श्री स्वामी निराकारानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी तथा आदरणीय श्री स्वामी भक्तिप्रियानन्द जी माता जी ने प्रवचन दिये तथा आदरणीय श्री स्वामी भक्तिभावानन्द जी और आदरणीय श्री ब्रह्मचारी आत्मनिष्ठानन्द जी ने भक्तिसंगीत प्रस्तुत किया। आदरणीय श्री स्वामी आशुतोषानन्द जी ने भी निज उपस्थिति दे कर शिविर की शोभावृद्धि की। गुजरात, राजस्थान, कर्नाटक, तमिल नाडु, केरल तथा दिल्ली के लगभग ६०० भक्त शिविर में प्रतिभागी बने। १० पुस्तकों का विमोचन हुआ और सुन्दर रेझिन बैग में उनका निःशुल्क वितरण किया गया।

स्वर्ण जयन्ती के समस्त वर्ष में शाखा ने प्राणियों, पक्षियों तथा कीटकों को भोज्य-पदार्थ देने की व्यवस्था की है तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की स्मृति में शाखा ने इस प्रवृत्ति का विस्तार श्वानों को रोटियाँ देने में किया है एवं समस्त प्रतिभागियों को अनाज तथा आटा सुव्यवस्थित थैलियों में देने में किया है। उन्होंने २० शाखाओं को सिद्ध की गयी पादुकाएँ तथा श्री कृष्ण भगवान्, गुरुदेव तथा स्वामी जी महाराज के विशाल कद के चित्र दिये हैं।

इस अवसर पर शाखा ने आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी के दो योगासन कैम्प आयोजित किये। शाखा ने परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज तथा आदरणीय श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी की दिव्य जीवन संघ की ध्रांगध्रा तथा वांकानेर शाखाओं की मुलाकातें सुआयोजित की। वांकानेर शाखा की मुलाकात, उस शाखा के ५३ वें स्थापना दिन को आयोजित की। कठडा ग्राम में सत्संग केन्द्र तथा नूतन सत्संग केन्द्र की मुलाकात ली। दिनांक ८ नवम्बर को ४७ भक्तों को मन्त्र-दीक्षा दी गयी।

४ : मुख्यालय के संन्यासियों की मुलाकातें

आगरा (उत्तर प्रदेश): शाखा की नूतन निर्मित स्वामी शिवानन्द प्रार्थना भवन की इमारत में, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द

जी महाराज ने आयुर्वेदिक चिकित्सालय का प्रारम्भ किया। उन्होंने अनेक भक्तों की उपस्थिति युक्त जाहिर सत्संग में प्रवचन दिया।

चण्डीगढ़ : आदरणीय श्री स्वामी रामराज्यम् जी ने दिनांक १२ नवम्बर से १६ नवम्बर पर्यन्त प्रवचन किये।

जयपुर (राजस्थान): परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी सेवानन्द जी तथा आदरणीय श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी ने २२, २३ और २४ अक्तूबर को प्रवचन दिये। आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने दिनांक १९ से दिनांक २५ पर्यन्त योगासन तालीम वर्ग परिचालित किया।

नई दिल्ली, स्वामी शिवानन्द कल्चरल एसोसियेशन : परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन में शाखा की स्वर्ण-जयन्ती कार्यक्रमों का उद्घाटन किया और दिनांक २७ जुलाई को 'The Essence of Upanishads' विषयक प्रवचन दिया। कर्नाटक राज्य के भूतपूर्व राज्यपाल श्री टी. एन. चतुर्वेदी जी प्रमुख अतिथि थे।

५ : स्थापना-दिन

भंजनगर (उड़ीसा) : शाखा ने परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज द्वारा दिनांक १९ अक्तूबर १९८१ में उद्घाटित 'चिदानन्द कल्चरल सेन्टर' के स्थापना दिन निमित्त दो सत्रों में पादुका पूजा, हवन तथा प्रवचन आयोजित हुए।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़) : शाखा ने निज निर्मित स्वामी शिवानन्द भजन मन्दिर में दिनांक २३ नवम्बर को हवन तथा आध्यात्मिक कार्यक्रम के साथ मनाया।

पटियाला (पंजाब): शाखा ने निज स्थापना दिन दिनांक २३ नवम्बर को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण तथा नारायण सेवा द्वारा परिचालित किया।

६ : ऋतु-पर्व

१. नवरात्रि और विजयादशमी

अम्बाला (हरियाणा): देवी-मन्त्र का सामूहिक जप।

बल्लारि (कर्नाटक): विजयादशमी को विशेष कार्यक्रम।

भंजनगर (उड़ीसा) : सायंकाल में देवी भागवत विषयक और प्रभात में विवेकचूड़ामणि विषयक प्रवचन।

बीकानेर (राजस्थान): दुर्गा सप्तशती के पाठ, श्री ललिता सहस्रनाम और श्री रामचरित मानस, विशेष पूजा, अखण्ड दीप, कन्या-पूजा तथा मिठाइयों, वस्त्रों तथा बर्तनों का वितरण, प्रसाद।

घाटपदमुर (छत्तीसगढ़): अखण्ड दीप, दैनिक पूजा, श्री दुर्गा सप्तशती और श्री रामचरित मानस के दैनिक पारायण, हवन, जप, संकीर्तन, कन्या-पूजा।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): अखण्ड दीप, श्री दुर्गासप्तशती पारायण, १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड संकीर्तन, कन्या-पूजा।

जयपुर : दैनिक पूजा, हवन, आरती और प्रसाद।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़) : दैनिक सत्संग, भजनकीर्तन।

नीमापड़ा (उड़ीसा): श्री दुर्गा अष्टमी को ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, योगासन, पादुका पूजा, देवी-मन्त्र के साथ लक्षार्चना सहित देवी-पूजा, सान्ध्य-सत्संग।

रायपुर (छत्तीसगढ़): विशेष पूजा, हवन, भजन-कीर्तन।

विशाखपटनम् (आन्ध्र प्रदेश): दैनिक दो सभाओं में पूजा, स्तोत्र-पाठ, श्री देवी भागवतम् का पाठ।

२. दीपावली और कार्तिक मास

अम्बाला (हरियाणा) : विशेष सत्संग तथा दीप-शोभा

बड़कुँआल (उड़ीसा): दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय सभा और माहभर स्वाध्याय।

बल्लारि (कर्नाटक): विशेष पूजा।

बीकानेर (राजस्थान) : पूजा, अष्टोत्तर नामावली सहित पूजा, देवी-स्तोत्रों के पाठ।

छत्रपुर (उड़ीसा) : श्री रामचरित मानस का माहभर पारायण।

गान्धीनगर (गुजरात): दीपावली पर निर्धनों को मिठाइयों और बिस्कुटों का वितरण। पूर्णिमा को विशेष सत्संग।

घाटपदमुर (छत्तीसगढ़) : दीप-शोभा, दीपावली को विशेष पूजा।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़) : दीपावलीह्नहदीप-शृंगार, विशेष पूजा, पूर्णिमाह्नह६ घण्टे कीर्तन, विशेष पूजा, हवन, भण्डारा (सबको निःशुल्क भोजन)।

जयपुर : माहभर कथा।

रायपुर (छत्तीसगढ़): अखण्ड ज्योति, दैनिक पूजा।

सुनाबेडा (उड़ीसा): पूजा, स्तोत्रपाठ, आरती।

७ : अन्य विशेष गतिविधियाँ

बरगढ़ (उड़ीसा): अध्ययन-वर्ग तथा शिवानन्द योग विद्यालय

में योगासन वर्ग। प्रति रविवार को भगवद् गीता का अध्ययन। दिनांक १७ अक्तूबर को आदरणीय श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी द्वारा आध्यात्मिक व्याख्यान।

जयपुर : श्री रामायण कथा तथा दिनांक १८ से दिनांक २५ पर्यन्त सन्त-सभा। एकादशी को एक व्याख्यान। दिनांक १७ अक्तूबर को व्याख्यान। महारास-पूर्णिमा को भजन-कीर्तन।

कोठावालसा (आन्ध्र प्रदेश): ६०० प्रतिभागियों सहित दिनांक २१ सितम्बर को आध्यात्मिक महासभा। आदरणीय श्री स्वामी रामयोगी जी ने एक पुस्तक का विमोचन किया।

नई दिल्ली, स्वामी शिवानन्द कल्चरल एसोसियेशन : दिनांक २८ जुलाई से दिनांक ३ अगस्त पर्यन्त श्रीमद् भागवत कथा। आदरणीय श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी ने सम्पूर्ण कथा में उपस्थिति दी।

सालेपुर (उड़ीसा) : श्रीमद् भागवत जयन्तीह्वह्वआध्यात्मिक प्रवचन। दिनांक ३० सितम्बर को स्थानिक कॉलेज में योग तालीम कैम्प, जिसमें ५० तालीमार्थियों ने भाग लिया। बाढ़ग्रस्त लोगों को शक्तिशाली सहायह्वह्ववृक्ष, वृक्ष के तनों में तैर कर भी अनेक जीवनों की रक्षा की। भोजन के पैकेटों, जल तथा एक सप्ताह पर्यन्त आवश्यकताओं की पूर्ति। दिनांक १८ को २५६ तालीमार्थियों को योग तालीम। परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्य-तिथिह्वह्वप्रभात में पादुका पूजा, अपराह्न में ३ घण्टों का अखण्ड कीर्तन तथा रात्रि को विशेष सत्संग।

साउथ बलांडा (उड़ीसा): दिनांक ७ नवम्बर से दिनांक १३ नवम्बर पर्यन्त कथा और रामायण सहित श्रीमद् भागवत सप्ताह।

भारतीय विद्या भवन की निबन्ध प्रतियोगिताएँ २००८

पाठकों को सूचित किया जाता है कि भारतीय विद्या भवन अन्य प्रतियोगिताओं के साथ-साथ श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की स्मृति में एक वार्षिक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है। इसका विवरण इस प्रकार है :

भवन की श्री स्वामी शिवानन्द स्मृति निबन्ध प्रतियोगिता २००८

विषयह्वह्व**शिक्षा एवं जीवन-मूल्य**

आयु-सीमाह्वह्व२० से ३० वर्ष; पुरस्कारह्वह्व रु.१०००, रु.७००, रु.३००

माध्यमह्वह्व**हिन्दी**

आवेदन-पत्र की अन्तिम तिथिह्वह्व**३१ जनवरी २००९**

आवश्यक शर्तें

१. सीमा : २००० शब्द। निबन्ध की दो टाइप की हुई प्रतियाँ।

२. भाग लेने वाले प्रतियोगी का पूरा नाम, घर का पता, आयु का प्रमाण-पत्र, फोटो (छोटी), दूरभाष नं./फैक्स नं./ई-मेल पता।

३. पुरस्कार-विजेता आगामी तीन वर्षों तक इस प्रतियोगिता में पुनः भाग नहीं ले सकता।

४. निर्णायकों का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा।

५. पत्र-व्यवहार के लिए पताह्वह्वप्रो. एस. ए. उपाध्याय, प्रोजेक्ट अधिकारी, भवन की निबन्ध प्रतियोगिताएँ, भारतीय विद्या भवन, कुलपति मुंशी मार्ग, चौपाटी, मुम्बईह्वह्व४०० ००७

E-mail: brbhavan@bom7.vsnl.net.in web-site: http://www.bhavans.info

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पावन-स्मृति में

श्रीमती सीता बेन

हमें अहमदाबाद से सूचना मिली कि आश्रम की एक भक्त श्रीमती सीता बेन की मृत्यु कैंसर की दीर्घकालीन प्राणघातक असाध्य बीमारी के कारण दिनांक १४ दिसम्बर २००८ को प्रातः ३.३० बजे हो गयी है। वे श्री श्रेय पाण्ड्या की धर्मपत्नी हैं। श्री श्रेय पाण्ड्या ने अपने पिता श्री विष्णु पाण्ड्या की प्रेरणा से, सन् १९८० तथा १९९० के दशकों में अपने प्रिन्टिंग प्रेस, साहित्य मुद्रणालय में प्रतिवर्ष दो पुस्तकें छाप कर तथा निःशुल्क अन्य सामग्री छपवा कर, आश्रम की प्रेमपूर्ण सेवा के रूप में श्री गुरुदेव के आश्रम की अपरिमेय सेवा की है। साहित्य मुद्रणालय उस समय का पूरे गुजरात स्टेट में सबसे बड़ा प्राइवेट प्रिन्टिंग प्रेस था। सन् १९८० के अन्तिम दशक में, हमारे परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने उनकी फोर-कलर आफसेट मशीन का उद्घाटन किया तथा अन्य अवसर पर उनके नये घर का उद्घाटन भी किया था। हम परिवार के मृत्युशोक में सम्मिलित होते हैं तथा सर्वशक्तिमान् परमात्मा से तथा सद्गुरुदेव से सच्चे हृदय से प्रार्थना करते हैं कि मृतक की आत्मा को शाश्वत शान्ति व सद्गति प्रदान करें!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

केवल भारत में लागू

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के सदस्यता-शुल्क की एवं शाखाओं के सम्बद्धता-शुल्क की दरें

१. नवीन सदस्यता-शुल्क . . . . . रु. १५०/-
   प्रवेश-शुल्क . . . . . रु. ५०/-
   सदस्यता-शुल्क . . . . . रु. १००/-
२. सदस्यता नवीकरण-शुल्क (वार्षिक) . . . . . रु. १००/-
३. आजीवन सदस्यता-शुल्क . . . . . रु. ३,०००/-
४. संरक्षकता-शुल्क . . . . . रु. १०,०००/-
५. नयी शाखा खोलने का शुल्क** . . . . . रु. १०००/-
   प्रवेश-शुल्क . . . . . रु. ५००/-
   सम्बद्धता-शुल्क . . . . . रु. ५००/-
४. शाखा-सम्बद्धता (नवीकरण) शुल्क (वार्षिक) . . . . . रु. ५००/-

** नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।

➲ कृपया सदस्यता-शुल्क और शाखा-सम्बद्धता-शुल्क इंडियन पोस्टल आर्डर अथवा ऋषिकेश में स्थित किसी भी बैंक के नाम बने डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

➲ सदस्यता ग्रहण करने, पत्रिका भेजने एवं दि. जी. सं. से सम्बन्धित अन्य विषयों के लिए कृपया पत्रिका-विभाग/शाखा-विभाग से सम्पर्क करें। फो.नं. ०१३५-२४४२३४०

महत्त्वपूर्ण सूचना

सूचित किया जाता है कि दिनांक ४-१-२००९ को न्यासी परिषद् (बोर्ड ऑफ ट्रस्टी) की बैठक में परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज को द डिवाइन लाइफ सोसायटी का जनरल सेक्रेटरी और परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज को द डिवाइन लाइफ सोसायटी का ट्रेजरर निर्वाचित किया गया है।

नव वर्ष २००९ के अवसर पर परमादरणीय श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, परम पूज्य गुरुदेव एवं हमारे परम प्रिय परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के नाम पर द डिवाइन लाइफ सोसायटी के सभी भक्तों और सदस्यों को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं। वे सविनय दिव्य शुभाशीषों के लिए भी परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज एवं परमात्मा से सभी भक्तों एवं द डिवाइन लाइफ सोसायटी के सदस्यों के उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, शान्ति, समृद्धि और महान् उत्तरदायित्वों की सफलता एवं आन्तरिक आध्यात्मिक साधना की प्रगति के लिए प्रार्थना करते हैं।

सभी पत्र एवं पत्राचार आदि **'जनरल सेक्रेटरी, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, पो. ओ. शिवानन्दनगर २४९१९२, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत'** को सम्बोधित किया जाये। चेक/ड्राफ्ट के माध्यम से भेजे गये दान ऋषिकेश के किसी भी अनुसूचित बैंक पर **'द डिवाइन लाइफ सोसायटी, ऋषिकेश'** के नाम से भेजा जा सकता है, किसी व्यक्तिगत नाम से नहीं।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

गुरु स्वयं ब्रह्म अथवा ईश्वर है। गुरु ही आपका सच्चा पिता, माता, मित्र, पथ-प्रदर्शक तथा संरक्षक है। साधकों की आध्यात्मिक उन्नति के लिए गुरु की कृपा अनिवार्य है।

स्वामी शिवानन्द

THE FOLLOWING DVDs OF MAHASAMADHI ARADHANA OF WORSHIPFUL H.H. SRI SWAMI CHIDANANDAJI MAHARAJ ARE AVAILABLE FOR SALE

1. Sraddhanjali (Part—I) 50/-
2. Sraddhanjali (Part—II) 50/-
3. Bhandara and Ganga Arati 50/-
4. Prabhat Pheri and Paduka Puja 50/-

And

1. Vedic Sukta Chanting by
   H.H. Sri Swami Krishnanandaji Maharaj (Audio CD) 55/-

प्रेम : ईश्वर-प्राप्ति का निर्बाध और उन्मुक्त मार्ग

प्रेम-मार्ग ही वास्तविक राज-पथ है जो अमरत्व तथा शाश्वत आनन्द के परम धाम की ओर ले जाता है, जहाँ काल भी अपनी विनाशकारी शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता और न माया ही अपना मुख दिखला सकती है। यह ईश्वर-प्राप्ति के लिए निर्बाध और उन्मुक्त मार्ग है। प्रेम भक्त को जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त कर देता है। परम गति प्रेम की दासी है। प्रेम सर्वोच्च उपलब्धि है।

भक्त में आत्मोपभोग की कोई कामना नहीं रह जाती है। उसकी एकमात्र अभीप्सा भगवान् को प्रेम के लिए प्रेम करना और उनके आनन्द के लिए उनकी सेवा करनी होती है। इस प्रकार का प्रेम विकसित होने पर भगवान् भक्त के दास बन जाते हैं।

प्रेम एक महती शक्ति है। जो प्राणी इसके स्वामित्वपूर्ण प्रभाव में आ जाते हैं, उन पर यह निश्चय ही अद्‌भुत शक्ति का प्रयोग करता है। प्रेम महान् समताकारक है। निर्मल और नि:स्वार्थ प्रेम भगवान् को 'मानव' और मानव को 'भगवान्' बना सकता है। पृथ्वी पर प्रेम से बढ़ कर अन्य कोई शक्ति नहीं है। प्रेम की शक्ति के समक्ष सारे नियम ध्वस्त हो जाते हैं।

स्वामी शिवानन्द